अध्याय 14

भविष्यद्वाणी और भाषाएँ

पौलुस ने आत्मिक वरदान के बारे में उन प्रश्नों के उत्तर दिए थे, यह दिखाते हुए कि, वे मसीह की देह में एकता का निर्माण करने और अपने उपयोग के लिए प्रेम को नींव के रूप में रखने के उद्देश्य से थे। उसके शुरूवाती सूचीबद्ध वरदानों में से अन्य भाषाएँ विशेष रूप से ज़ोर दिए बिना रखी गई थी। उसने पहले इस वरदान को परिभाषित नहीं किया था; परन्तु जैसे जैसे उसके निर्देश आगे बढ़ते गए, यह तेज़ी से स्पष्ट हो गया था कि भाषाओं का वरदान का प्रयोग स्रोत था, जहाँ से कलीसिया में आत्मिक वरदान पर तनाव उत्पन्न हो गया था। अध्याय 14 में चेतावनियों को पढ़ने के बाद, पाठक समझने लगता है कि आत्मिक वरदान में आखिर क्यों अन्य भाषा को सूचीबद्ध किया गया है (12:28; देखें 12:10, 30)।

प्रेरितों की युक्ति पहले, प्रेम के साथ आत्मा के अलौकिक अभिव्यक्तियों के विपरीत थी। पौलुस उन भाइयों से कहता है, "यदि आपको प्रतिस्पर्धा करनी है," "परमेश्वर के लिए, अपने भाइयों और बहनों के लिए, और सभी लोगों के लिए प्रेम दिखाने के अपने धुन में प्रतिस्पर्धा करें।" प्रेम मसीही जीवन का नैतिक आधार है, परन्तु पौलुस प्रेम की प्राथमिकता की अपील करके, कुरिन्थ में आत्मिक वरदान के बारे में मुद्दों को हल नहीं कर सका। आत्मिक वरदान सामान्य रूप से एकमात्र विवाद का स्रोत नहीं था।

विशेष रूप से, भाषाएँ मुद्दे पर थीं, जबकि भाषा में बोलने मात्र से ही अधिक तनाव उत्पन्न हो रहा था। मसीही कितने भी प्रकार के भाषाओं में बोल सकते या चंगा या अन्य आत्मिक वरदान प्रकट कर सकते थे। वरदान पाए हुए लोग घरों में, बाज़ारों में, या निजी रूप में बोल सकते थे। परन्तु, ऐसा लगता है कि *कलीसिया सभा में भाषाओं में बोलने* से विवाद हो रहा था।

वर्णन करने के बाद जीवन के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप में प्रेम को गले लगाने का महत्व सभी दिए गए आत्मिक वरदानों की तुलना में अधिक था, पौलुस ने दूसरी अपील को प्रस्तुत किया। उसका उद्देश्य सभा में भाषाओं में बोलने के उत्साह को कम करना था। जैसा कि प्रेरित ने पहले आत्मिक वरदानों की तुलना सामान्य रूप से प्रेम से की थी, अब वह भाषाओं में बोलने की तुलना भविष्यद्वाणियों में बोलने से कर रहा था। "यदि आप प्रभु के लिए अपना उत्साह प्रदर्शित करना चाहते हैं," पौलुस कहने लगा, "ऐसा एक वरदान का अभ्यास करने के द्वारा प्रोत्साहित करें जो सभी विश्वासियों का निर्माण करे।" दोनों

भाषाएँ और भविष्यद्वाणी में मौखिक भाव शामिल था। प्रेरित ने उन लाभों की तुलना करके जो कि भविष्यद्वाणी ने विश्वासियों के पूरे समुदाय में लाया था, से उन भाषाओं की अंधाधुंध उपयोग को हतोत्साहित किया। भविष्यद्वाणी, या परमेश्वर की इच्छा की घोषणा, भाषाओं में बोलने की तुलना में भाषा का एक और अधिक उद्देश्यपूर्ण और विचारशील तरीका था।

पौलुस का स्पष्टीकरण (14:1-5)

[1]प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो। [2]क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। [3]परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है। [4]जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। [5]मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषाएँ बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

आयत 1. पौलुस ने अपने अपील की शुरूवात और अन्त मसीहियों के लिए **प्रेम का अनुकरण करो,** जो "सबसे उत्तम मार्ग" (12:31) है और एक अपरिहार्य: **... आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो** के साथ की। अद्भुत वरदान जो मसीहियों के बीच कुरिन्थ में प्रकट हुए थे, उन्हें हल्के में नहीं लिया जाता सकता था। प्रेरित ने भाइयों को आत्मा जो भी वरदान देता है उसमें आनन्दित रहने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रेम के बारे में अपने पाठकों को सलाह देने के बाद, पौलुस ने πνευματικῶν (*प्नुमाटिकोन,* "आत्मिक वरदान"; देखें 12:1) शब्द का प्रयोग किया। वरदान "आत्मिक" थे क्योंकि आत्मा के प्रयोजनों को आगे बढ़ाने के लिए आत्मा द्वारा उन्हें दिया गया था, परन्तु वे परमेश्वर (χαρίσματα, *खारिश्माटा)* से प्राप्त अनुग्रह के "वरदान" भी थे। अध्याय 12 में पाँच बार (आयत 4, 9, 28, 30 और 31 में), पौलुस ने उन्हें इस यूनानी शब्द का प्रयोग करते हुए कहा; परन्तु फिर उसने इस शब्द का प्रयोग पत्री में नहीं किया।

वरदान पाए हुए मसीहियों ने अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग अच्छे रीति से किया, परन्तु आत्मा द्वारा प्राप्त किए गए कुछ वरदान दूसरों से अधिक आशीष कलीसिया को प्राप्त हुआ। अनअनुशाषित भाषाओं के प्रयोग को रोकने का प्रयास करने से पहले, प्रेरित प्रेम के एक आत्मिक वरदान के बारे में बताने लगा जो मसीह की देह के निर्माण में भाषा से उत्तम था। उसकी चिन्ता प्रत्येक मसीही के व्यक्तिगत संवर्धन के लिए उतना अधिक नहीं था; बल्कि, यह प्रत्येक के लिए उसकी देह में भागी होने का एक मार्ग था। कुरिन्थ में पाए गए आत्मिक वरदान

के बारे में, पौलुस ने कहा कि भविष्यद्वाणी ने देह की वृद्धि और सुदृढ़ीकरण के लिए भाषाओं में बोलने की अपेक्षा अधिक लाभ प्रदान किया।

आई. हॉवर्ड मार्शल ने कहा कि कलीसिया की सभा एक ऐसा वातावरण था जिसमें कुरिन्थियों की कलीसिया में विरोधाभास उठ रहे थे।[1] इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसका निष्कर्ष सही है, परन्तु यह स्वयं से स्पष्ट नहीं है। जहाँ नया नियम में मसीहियों को इकट्ठा होने पर स्वयं का संचालन करने के तरीके के बारे में कुछ नहीं कहा जाता था, यह स्पष्ट है कि सभा कोई आकस्मिक बात नहीं थी। एक साथ इकट्ठी हुई कलीसिया मसीहियों को स्वयं को समझने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। एक उत्तम स्तर पर सभा ने मसीहियों को धर्मवैज्ञानीय रूप में परिभाषित किया। विश्वासियों के लिए एक आम सभा के बिना मसीह का देह होना असम्भव था।

आयत 2. पौलुस का क्या अर्थ था जब उसने संदर्भित किया कि **जो अन्य भाषा में बातें करता है ... परमेश्वर से** और **आत्मा में होकर बोलता है**? जब तक बाइबल के पाठकों को समझ नहीं आता कि कुरिन्थ में भाषाओं की घटना क्या थी, तो इन आयतों के भाग का अर्थ कम होगा। परिभाषाएँ पहले पाठकों के लिए निहित थीं; बाद की पीढ़ियों के अर्थों की खोज की जानी चाहिए। जैसा कि प्रेरितों ने कुरिन्थियों को लिखा था, उसे परिभाषाओं पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं थी; उसकी चिन्ता बुद्धिमानी और बुद्धिहीनता के भाषण के बीच अन्तर करने के लिए उतना अधिक नहीं था। वह किसी भी भाषा में बोली जाने वाली किसी भी बात की व्याख्या करने के लिए कुरिन्थियों का मार्गदर्शन कर रहा था। टिप्पणी करने वाले के पास दो विकल्प हैं। (1) वह कुरिन्थ की मातृभाषाओं को आत्मा से सम्पन्न लोगों द्वारा बोली जाने वाली सुसंगत भाषाओं के रूप में देख सकता है ताकि वे उन लोगों को सुसमाचार सुना सकें अर्थात् वे जिनके साथ वे बातचीत नहीं कर सके। (2) वह कह सकता है कि भाषाएँ भावनाओं से प्रेरित थीं, अर्थहीन बड़बड़ाहट उन्माद की दशा में बोली गई थी। इस आयत को देखकर, कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि कुरिन्थ की भाषाएँ उत्तरार्द्ध थी, जो कि व्यक्तिगत अनुभव, उत्साही भाषण, या अर्थहीन आवाज़ें हैं। प्रमाण स्थिति के इस दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करता है।

यह स्वयं स्पष्ट है कि जब कोई केवल किसी भी सुननेवाले को अज्ञात भाषा बोलने की क्षमता प्रदर्शित करता है, तो बातचीत स्वयं और परमेश्वर के बीच होती है। जहाँ तक उनके दर्शकों की चिन्ता थी कि, वरदान पाए हुए बोलनेवाले ने एक रहस्य बताया था। पौलुस ने तर्क दिया, भविष्यद्वाणी सुननेवाले के सामने अज्ञात भाषा में नहीं बोलने से कलीसिया को लाभ होगा।[2]

इसके अलावा, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि केवल यहाँ और प्रेरितों के काम 2 में पाठकों को इस बात की भावना प्राप्त करने की अनुमति देने के लिए भाषाओं में बोलने के बारे में पर्याप्त कहा गया है।[3] प्रेरितों के काम 2 में, किसी भाषा में बोलने का तात्पर्य स्पष्ट रूप से एक भाषा को बोलने से था। प्रेरितों को उनके सुननेवालों की भाषा बोलने का अधिकार दिया गया था ताकि वे

सुसमाचार के बारे में बातचीत कर सकें। यदि 1 कुरिन्थियों 12-14 में चर्चा की गई भाषाएँ उन्मादी बातें बनी रहती हैं और असली मानव भाषा नहीं हैं, तो यह अजीब बात है कि दो पूरी तरह से भिन्न घटनाएँ उसी शब्द के साथ किसी भी स्पष्टीकरण के साथ निर्दिष्ट नहीं की जाएँगी। जैसा कि भाषाएँ पेन्तिकुस्त पर आत्मा की एक उपयुक्त अभिव्यक्ति थीं, जहाँ कई जाति के लोग उपस्थित थे, वे स्पष्ट रूप से कुरिन्थ के लिए उपयुक्त रहे होंगे। कुरिन्थ की सर्वदेशीय प्रकृति उस शहर में मसीहियों को एक आत्मिक देन के रूप में भाषओं को सौंपी प्रतिष्ठा में एक महत्वपूर्ण कारक थी।

जिमी जिविडेन ने व्याख्या देने के लिए काम किया है, क्यों "भाषाओं" के लिए परिभाषा प्रेरितों के काम 2 में अधिक महत्वपूर्ण था कुरिन्थियों की पत्री में इसी घटना से था। थियुफिलुस, जिसने कहा,

> ... एक अविश्वासी या एक नया विश्वासी जिसे आगे निर्देश की आवश्यकता थी उसमें होना चाहिए। उसे *ग्लोसा* का वरदान को समझाना आवश्यक था। कुरिन्थ में जिन लोगों को पौलुस ने लिखा था, उन्हें ऐसी परिभाषा की आवश्यकता नहीं रही होगी। *ग्लोसा* का वरदान वहाँ बहुत आम था और एक लम्बे समय से जाना जाता था। पौलुस मान सकता था कि उसके पाठक को परिभाषा की आवश्यकता नहीं होगी, लूका को नहीं हो सकती थी। लूका की साधारण परिभाषा को अनदेखा करना और पौलुस की कुरिन्थियों की पत्री से परिभाषा लेने का प्रयास करना मूर्खता होगी।[4]

यदि किसी के पास आत्मा का वरदान था तो वे स्वयं अपनी इच्छा से वरदान का प्रयोग कर सकते थे, यह शायद ही आश्चर्य की बात है कि किसी को भाषाओं के वरदान के साथ कुछ अवसरों पर चुप रहने की आवश्यकता रही होगी। यदि वह बोलने का आग्रह करता था, परन्तु कोई उसे समझ नहीं सकता था, तो विकल्प अपने और परमेश्वर के बीच बात करना था (1 कुरिन्थियों 14:28)। कोई परदेशी या अन्य भाषा में बात करता था, तो वह शायद अपने शब्दों के अर्थ को पहचान सकता था या नहीं पहचान न सकता था (14:13)। यदि उसके पास भाषान्तरण का वरदान नहीं था, तो आत्मा से सम्पन्न एक और व्यक्ति की आवश्यकता होगी। आत्मा ने कुछ लोगों को भाषान्तरण का वरदान दिया था। जिसकी पौलुस अपेक्षा करता था कि किसी के लिए भाषाओं का भाषान्तरण करना महत्वपूर्ण है। इसका तर्क है कि भाषाओं में बोलना भाषाएँ थीं। उत्साह की स्थिति में अर्थहीन ध्वनियों के भाषान्तरण का अर्थ समझने का कोई उचित अर्थ नहीं है। आधुनिक धार्मिक परिदृश्य में, अन्य भाषा बोलने के सम्पूर्ण अध्ययन के बाद, उन्मादपूर्ण कथन जिसकी विलियम जे. समरीन ने टिप्पणी की,

> ... जब हम समझते हैं कि भाषा क्या है, तो हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि कोई भी भाषा नहीं, जो मानव भाषा का एक नमूना है, चाहे कितनी अच्छी तरह से क्यों न बनाया गया हो, क्योंकि यह न तो आंतरिक रूप से

संगठित है और न ही व्यवस्थित रूप से संसार से सम्बन्धित है जिसे मनुष्य समझता है।[5]

उन्मादपूर्ण कथन अर्थ को व्यक्त नहीं करते, कम से कम उस तरह से नहीं जैसा कि वास्तविक भाषाएँ करती हैं।

नया नियम में आने वाली अन्यभाषाओं की घटनाओं को भाषा के रूप में समझा जाना चाहिए। यह प्रत्येक मामले में संदर्भ द्वारा सिद्ध होता है। प्रेरिताई युग में मसीहियों को दी गई अद्‌भुत शक्तियों या वरदानों से ऐसा प्रतीत होता है कि जिनके पास वरदान था, वे उसकी इच्छा से इसका प्रयोग कर सकता थे। यदि यह सच है, तो बोलनेवाले ने एक वास्तविक भाषा में भी बात की होगी, भले ही तब वहाँ कोई भी उपस्थित न रहा हो जो उस भाषा को बोलता था। उस स्थिति में, उसका बोलना, शायद उसके स्वयं के आलावा किसी के लिए भी लाभ की बात नहीं रही होगी। यदि शब्दों को जो किसी भाषा में बोली गई हो और उसका भाषान्तरण या अनुवाद नहीं किया गया हो, तो जो भी बातचीत हुई थी वह उसके और परमेश्वर के बीच में हुई थी। भाषाओं का वरदान, इस तरह से समझा जाता है, यह स्पष्ट करता है कि कुछ कुरिन्थियों ने इतनी विश्वासयोग्यता से वरदान की माँग क्यों की थी। यह प्रतिष्ठा की निशानी थी क्योंकि वरदान पाने वाला व्यक्ति अपने विवेक के आधार पर इसका उपयोग कर सकता है। पौलुस ने लिखा, "भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है" (14:32)। न तो भाषा में बोलना और न ही भविष्यद्वाणी करना आत्मा द्वारा मसीहियों को सहज रूप से नियन्त्रण करने का परिणाम था। वरदानों का प्रयोग करने के लिए वक्ता द्वारा ऐसा करने का इरादा आवश्यक है।

इस संदर्भ में वास्तविक भाषा के रूप में भाषाओं के वरदान को समझा जा सकता है, और यह वही वरदान है जो 2 प्रेरितों के काम में था। इसलिए, भाषाओं को वास्तविक भाषा के रूप में मानना आवश्यक है। जब पौलुस ने बाद में कहा था कि भाषा अविश्वासियों के लिए एक चिह्न है (1 कुरिन्थियों 14:22), अनुमान यह है कि अविश्वासी ने अपनी मूल भाषा सुनने की अपेक्षा नहीं की थी। सभा में किसी के द्वारा अद्‌भुत रीति से बोली जाने वाली अपनी मातृभाषा को सुनना उसके लिए एक शक्तिशाली चिह्न रहा होगा कि परमेश्वर इन लोगों के बीच काम कर रहा था। दूसरी ओर, विश्वासियों के सामने अन्य भाषा में बोलना, चाहे वे समझ गए हों या न समझे हों, केवल दिखावटी था।

आयत 3. परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता (था), उसके सुननेवालों के द्वारा समझा जा सकता था, और क्योंकि आत्मा ने उसे उनकी उन्नति के लिए एक संदेश दिया था, जो भविष्यद्वाणी करता था वह **मनुष्यों** के साथ बातें किया करता था। जिस सदस्य ने भविष्यद्वाणी की थी, उससे कलीसिया का लाभ हुआ; जिसने बिना भाषान्तरण के भाषा में बात की थी, केवल स्वयं को अच्छी रीति से लाभ पहुँचाया। पौलुस की चेतावनियाँ लागू की गईं क्योंकि कलीसिया की सभा में वह संदर्भ था, जिसमें भाषा में बोलनेवाले और भविष्यद्वाणी करनेवाले दोनों

होते थे। उसकी चिन्ता उन भाइयों के व्यवहार के प्रति थी जब वे कलीसिया के रूप में इकट्ठा हुआ करते थे।

आयत 4. पौलुस ने कहा, **जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।** जैसा कि पहले से ही उल्लेख किया गया है, जैसा कि कोई परदेशी भाषा में अद्‌भुत रीति से बात करता हो वह शायद स्वयं को जानता या नहीं जानता हो कि वह क्या कह रहा था। स्पष्ट है, कुछ ने ऐसा किया (देखें 14:5)। निश्चित रूप से, किसी को मालूम नहीं होता कि वह क्या कह रहा था यदि उसकी व्याख्या एक अति उत्साही दशा से बनाई गई थी। चाहे वह अपने शब्दों का अर्थ जान गया हो या नहीं, एक ऐसी भाषा में बोलना जिससे वह अनजान हो किसी और को न सही परन्तु स्वयं को लाभ पहुँचाता है, जब तक कि एक दुभाषिया उपस्थित न हो, या वह उन लोगों के साथ न हो जो उस भाषा को बोलते थे और उस संदेश के द्वारा उन्नति पाते थे। केवल वरदान को दिखाने के लिए किसी को भी कोई बढ़ावा नहीं दिया गया था। इसके विपरीत, जो भविष्यद्वाणी करता वह बात करता था, ताकि सभी समझ सकें कि वह क्या कह रहा था।

आयत 5. पौलुस ने इनकार नहीं किया कि जब उसने भाषाओं के वरदान का अभ्यास किया, तो वक्ता को लाभ हुआ। उसने कहा, **अब मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो**। इसलिए, परिस्थितियों को देखते हुए, प्रेरित ने कहा कि वे **भविष्यद्वाणी करें**। भाषाओं में बोलना कलीसिया के लिए उपयोगी था, तभी जब शब्दों के साथ उन लोगों के लिए अनुवाद नहीं किया गया था जो भाषा से अनजान थे। भविष्यद्वाणी और अनुवाद की गई भाषा लाभकारी थी क्योंकि उनके माध्यम से बोलनेवाले ने कलीसिया की उन्नति की थी।

अनुवाद का वरदान, उन भाषाओं को समझने की अलौकिक क्षमता थी जिसे कम से कम वर्तमान में उपस्थित कुछ लोग समझ नहीं पाते थे। तभी जब कोई संदेश को अन्य भाषा में दिया गया हो जिसे एक बोली में अनुवाद किया जाता था कि सुननेवाले समझ सकें कि जो बोला गया था उससे कलीसिया प्रोत्साहित हो सके। जब दुभाषिया उपस्थित होते थे, भविष्यवाणी के समान, भाषाओं में बोलने से कलीसिया की उन्नति होती थी। जिससे पौलुस अपेक्षा करता था कि किसी को अनुवाद करने में सक्षम होने के लिए प्रश्न में भाषाएँ वास्तविक भाषाएँ थी। जब भाषाएँ सुगम थीं, तो उनसे उन्नति हुई।

पौलुस के वृत्तांत (14:6-9)

[6]इसलिए हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बातें करूँ, और प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा? [7]इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएँ भी जिनसे ध्वनि निकलती है, जैसे बाँसुरी या बीन, यदि उनके स्वरों में भेद न हो तो जो फूँका या

बजाया जाता है, वह कैसे पहिचाना जाएगा? 8और यदि तुरही का शब्द साफ़ न हो, तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा? 9ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ़-साफ़ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।

आयत 6. प्रेरित ने इस मामले को एक काल्पनिक स्थिति में कम समझा, यह मानते हुए कि वह कभी भविष्य के दिनों में कुरिन्थ की कलीसिया में आएगा, वहाँ केवल अन्य भाषा में बोलेगा जो कुरिन्थियों के लिए पूरी तरह अनजानी हो। कलीसिया का कोई लाभ नहीं हो सकता था, जब तक कि वे **प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश** की बातें न करें। उसी प्रकार, कलीसिया उन लोगों से लाभ नहीं पा रही थी, जो शानदार वरदान का प्रदर्शन करने के उद्देश्य भाषाओं में बात करते थे जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया था। आत्मिक वरदान केवल उस अकेले की उन्नति के लिए नहीं थे जो उस वरदान का प्रयोग करता था। बल्कि वे पूरी कलीसिया के लिए थे।

बिना समझ के अन्य भाषा बोलनेवाले, प्रेरित को अर्थहीन लगते थे। शब्द के स्रोत चाहे जो भी रहे हो, पौलुस ने ज्ञान और उपदेश का विकल्प चुना। निश्चित रूप से, वह भावनात्मक रूप से प्रेरित उन्मादों से प्रभावित नहीं था। इस प्रकार की गतिविधियाँ उन समारोहों में उचित रीति से शोभा देती थीं जो डायनिसस या साइबेले को समर्पित होती थीं।

आयत 7. वृत्तांत से आगे बढ़ते हुए, जो उसके स्वयं पर केन्द्रित था, पौलुस ने प्राकृतिक संसार पर ध्यान दिया। संगीत वाद्ययंत्र, शायद एक **बाँसुरी या बीन** ने मामले को अर्थ प्रदान किया। न केवल एक पहचान योग्य ध्वनि के रूप में चिह्नित किया गया था, बल्कि किसी भी प्रकार के संगीत के नोट्स को एक वाद्य यंत्र में बजाने में भी पहचानने योग्य था, राग के अनुक्रम में सुनने या कोई भी बात करने में आनन्द प्राप्त करने के लिए था। जब कोई व्यक्ति ऐसी भाषा बोलता था जिसे कोई समझ नहीं पाता था, तो उसके शब्द एक संगीत वाद्य यंत्र के बराबर होते थे जो कोई विशिष्ट संगीत चरित्र को नहीं बताता है, जब इसे बजाया जाता है। आज का पाठक एक पियानो की कल्पना कर सकता है जो पियानो की तरह आवाज़ नहीं करता है। इससे सुननेवालों को कोई आनन्द नहीं होगा और कुछ भी पहचानने योग्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार, मौखिक स्वर जो कि कोई भी समझा न पाएगा, उपयोग किए बिना ध्वनि मात्र तरंग होंगे। जिन भाषाओं का भाषान्तरण नहीं किया गया वे निरर्थक थे।

आयत 8. एक संगीत वाद्य यंत्र को दूसरे से अलग करने में सक्षम होना क्यों महत्वपूर्ण होना चाहिए? क्योंकि सभी वाद्य यंत्र पूरी तरह से मनोरंजन के लिए नहीं होते थे। यदि **तुरही का शब्द साफ़ न** था, तो किसी भी हमलावर बल द्वारा एक शहर को धमकी दी जाने पर खतरे का कोई संकेत नहीं दिया जाएगा। तो कोई **लड़ाई के लिए तैयारी** नहीं **करेगा.** कैसे कोई तुरही की चेतावनी को पहचान पाएगा यदि उसका शब्द साफ़ नहीं था? लोगों के बचाव के लिए तुरही

के साफ़-साफ़ शब्द के बिना, लुप्तप्राय शहर नष्ट हो जाएँगे। इसी प्रकार, शब्द जो एक ऐसी भाषा में बोली जाए जिसे कोई समझ नहीं पाता था, तो कलीसिया को कोई लाभ नहीं मिलता था। जिन शब्दों को बोला गया वे कोई चेतावनी, कोई शिक्षा, और कोई प्रोत्साहन नहीं देंगे।

आयत 9. पौलुस ने कुरिन्थ की वर्तमान परिस्थितियों के वृत्तांत को लागू किया। **तुम** प्रभावशील हो। वह पूछ रहा था, "क्या, वास्तव में" "कोई आप जो कुछ बोलते हैं उसे समझ पाएगा जब तक आप सुगमता से न बोलें?" जब तक बोलनेवाले की बात समझ नहीं आए, उसका किसी से बोलना व्यर्थ ठहरता है। जब तक कि **जो कुछ कहा जाता है** जिसे लोग सुनते हैं, तब तक लोगों को यीशु को जान लेने का लक्ष्य निष्फल हो जाता है। प्रेरित के अनकहे शब्द यह है कि भाषा बात करने के लिए होती है। यदि कोई व्यक्ति किसी संदेश को संप्रेषित नहीं करता है, तो वह **हवा से** बातें करनेवाले ठहरता है। पौलुस ने बोलनेवाले के किसी भी भावनात्मक लाभ की कोई चर्चा नहीं की। आराधना और प्रशंसा, उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि वे उपासकों के लिए हैं, यहाँ पौलुस की चिन्ता यह नहीं थी; वह कहे जाने और समझे जाने वाले संदेशों के बारे में बात कर रहा था।

पौलुस का अनुप्रयोग (14:10-12)

[10]जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएँ क्यों न हों, परन्तु उनमें से कोई भी बिना अर्थ की न होगी। [11]इसलिए यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूँ, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूँगा और बोलनेवाला मेरी दृष्टि में परदेशी ठहरेगा। [12]इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

आयत 10. आयत 1 से 9 में, पौलुस ने एकवचन या बहुवचन में छः बार γλῶσσα (*ग्लोसा,* "भाषा") का प्रयोग किया है। एक ऐसा अनुवाद है जो "भाषा" या "भाषाओं" के साथ सभी घटनाओं का अनुवाद करता है। प्रेरित ने स्पष्ट किया कि 10 और 11 आयतों में "भाषा" कहने का उसका क्या अर्थ है, जब उसने एक वस्तुतः का पर्याय शब्द को चुना। γλῶσσαι (*ग्लोस्साई,* "भाषाओं") और φωναί (*फ़ोनाई,* "आवाज़ों" या "बोलना") दोनों के संदर्भ में, भाषाओं को संदर्भित करते हैं। कुरिन्थ में आत्मा से वरदान पाए मसीहियों द्वारा अद्‌भुत रीति से बोली जाने वाली "भाषाएँ" पौलुस की चिन्ता का विषय था; परन्तु यहाँ उसने सामान्य रूप से बोले जाने वाले भाषाओं का वृत्तांत दिया, अर्थात् ये सामान्य अर्थों के साथ सीखी जाने और प्रतिदिन बातचीत में लोगों द्वारा बोली जानी वाली भाषाएँ हैं। प्रेरित ने अभिप्राय दिया कि कोई भाषा **बिना अर्थ के** नहीं है। व्यापारियों के बीच व्यापार क्षेत्र के लिए जो बातचीत सच था, वह उन के लिए भी भाषाओं सच था जो आत्मा से वरदान पाए व्यक्तियों के बारे में भी था जिन्होंने मसीहियों की

सभा में बोला था। जिसका कुछ अर्थ होता था।

13वीं आयत में प्रेरित ने "भाषा" के उपयोग के लिए किया। पौलुस के वृत्तांत की प्रकृति के कारण *ग्लोस्साई* ("भाषा") से *फ़ोनाई* ("आवाज़" या "कथन") तक बदलाव की आवश्यकता थी। यह कोई संकेत नहीं है, जैसा कि कुछ का दावा है, कि पौलुस के लिए *ग्लोस्साई* उत्साहजनक शब्द और *फ़ोनाई* सुगम भाषा के शब्द का प्रयोग था।

आयत 11. जब तक बात न की जाए, भाषाएँ उद्देश्य रहित हवा में घूम रही आवाज़ की तरह होती थी। एक बजता हुआ गाय के गले की घंटी के समान उपयोगी था। प्रेरित ने एक रोचक शब्द का प्रयोग किया था कि यह ज़ोर देने के लिए कि एक भाषा, चाहे पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर या स्वाभाविक रूप से सीखी हो, केवल एक भ्रम पैदा करती है जब सुननेवाला इसे समझ नहीं पाता था। उसने कहा कि जो बोलनेवाला है वह सुननेवाले की दृष्टि में **एक परदेशी** ठहरेगा, न कि "असभ्य *जैसा*", बल्कि वास्तव में "एक परदेशी"। जो लोग भाषा, संस्कृति और सरकार के एक रूप से मिलकर बंधे हुए होते हैं, उनका एक शब्द होता है जिसे वे बाहरी लोगों के लिए उपयोग करते हैं। अमेरिकी उन्हें "परदेशी" कह सकते हैं। इस्राएलियों ने उन्हें "जातियों" (הַגּוֹיִם, *हग्गोइम*) के रूप में बताया था; मसीह के समय, यहूदी उन्हें "अन्यजाति" (τὰ ἔθνη, *ता एथने)* कहते थे। एक यूनानी व्यक्ति ने मानवता को उन लोगों में विभाजित किया जो पढ़े लिखे और संस्कृति की भाषा बोलते हैं, अर्थात् यूनानी और वे जो लोग "बार, बार, बार" जैसे आवाज़ करते थे जब वे बोलते थे। जो कोई यूनानी बोलनेवाने के पास इस तरह आवाज़ करता था वह "परदेशी" (βάρβαρος, *बारबरोस)* था। पौलुस ने कहा कि जब कोई सुननेवाला समझ नहीं पाता कि क्या कहा जा रहा था, भले ही बोलनेवाने को भाषा बोलने के लिए अद्भुत रूप से वरदान दिया गया हो, तो सुननेवाले के लिए वह एक परदेशी था।

आयत 12. फिर, पौलुस ने सर्वनाम **तुम** को रेखांकित किया। प्रेरित का तात्पर्य उन सभी से था जो उसने वर्तमान स्थिति के लिये कहा था। संदर्भ के आधार पर, यूनानी शब्द ζηλωταί *(ज़ेलोताई)* का अर्थ "धुन में लगे रहनेवाले" या "ईर्ष्या करनेवाले लोग" हो सकता है। **इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो,** तो व्यंग्य का एक शब्द सुना जा सकता है, परन्तु पौलुस की जो भी चिन्ता थी आत्मिक वरदानों के सकारात्मक लाभ के लिये उसकी सराहना से स्वभाव अनुकूल थे। आत्मा से प्रेरित इन योग्यताओं ने प्रभु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान के लिये मसीही गवाह को प्रोत्साहित किया। कुरिन्थ के मसीहियों के लिये यह "आत्मिक वरदानों की धुन" थी, परन्तु आत्मिक वरदान पूरी कलीसिया के लाभ के लिये होना था (अध्याय 12 के रूप में स्पष्ट है)। जब कलीसिया को लाभ होता है, हर कोई आशीषित होता है। आत्म-संतुष्टि के लिये वरदान प्राप्त करने के बदले, प्रत्येक सदस्य को **कलीसिया की उन्नति के लिये** जो भी वरदान मिला था उसे उपयोग करना था।

कलीसिया की उन्नति करना (14:13-19)

जब पौलुस भविष्यद्वाणी और भाषाओं की तुलना करता है, तो उसने ज़ोर देकर कहा कि सबसे बड़ा अन्तर यह है कि एक वरदान ने कलीसिया की उन्नति की; और दूसरा तब तक नहीं कर सकता जब तक कि बोलनेवाले के शब्दों का अनुवाद नहीं किया जाता। प्रेरित ने आत्मिक वरदानों के लिये धुन की सराहना की, जब उन वरदानों को "कलीसिया की उन्नति के लिये [दिया गया] हो" (14:12)। वरदान व्यक्तियों द्वारा शानदार तरीके से प्रदर्शित किया जा सकता है फिर भी परमेश्वर और उसकी कलीसिया की महिमा के लिये व्यर्थ ठहरता है। एक वरदान से उन्नति के लिये, उसे एक समझ में आने योग्य संदेश के रूप में व्याख्या करना चाहिए। यदि, जैसा कि हम विश्वास करते हैं, कुरिन्थ में अन्य भाषाओं का वरदान पवित्र आत्मा के अद्‌भुत सशक्तीकरण द्वारा मानवीय भाषाओं के रूप में बोला जा रहा था, जो इतने सशक्त थे, कि वे जिनको वरदान दिया गया था स्वयं के उन्नति के लिये अपने वरदान का उपयोग कर रहे थे। और इसी कारण, कलीसिया को थोड़ा ही लाभ प्राप्त हो रहा था।

पौलुस चाहता था कि अन्य भाषाओं का अनुवाद किया जाना यह दर्शाता है कि उसका विश्वास था कि उनका आन्तरिक अर्थ होता था। कुरिन्थियों के लिये उसका विचार था कि बोले जानेवाले शब्दों का अनुवाद की जानी चाहिए। यदि उनका अनुवाद नहीं किया जा सकता, तो वे कलीसिया की उन्नति के लिये व्यर्थ ठहरते, भले ही व्यक्ति विशेष के भावनात्मक या आत्मिक ज्ञान के लिये कुछ प्रश्नात्मक लाभ हो। पवित्र लोगों की सभा में विचलित होने के कारण मसीहियों या गैर-मसीहियों के लिये उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ था जो उनपर ध्यान देते थे।

[13]इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके। [14]इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। [15]अत: क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा। [16]नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन कैसे कहेगा? क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है? [17]तू तो भली भाँति धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती। [18]मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ। [19]परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि दूसरों को सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ।

आयत 13. एक व्यक्ति को एक से अधिक आत्मिक वरदान के साथ आशीषित किया जा सकता है। पौलुस ने सलाह दी कि जिसके पास अन्य भाषा में बोलने की योग्यता थी, उसे यह अलौकिक रूप से जानना होता था कि अनुवाद का वरदान प्राप्त करने के लिये भी प्रार्थना करनी चाहिए। केवल तब जब वह अपने

शब्दों का अनुवाद करता था, तो वे उन लोगों को एक संदेश दे सकते थे, जो इनके बारे में सुनना चाहते थे। क्योंकि **अन्य भाषा में** शब्दों के बोलने का अर्थ कुछ भी हो सकता था, तो वरदान पाया हुआ व्यक्ति, **वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।** जब तक कि कुछ अनुवाद करने के लिये न हो अनुवाद के वरदान के लिये प्रार्थना करने में, किसी भी बिंदु को देखना कठिन है, अर्थात् जब तक कोई आत्मिक वरदान पाया हुआ मसीही अन्य भाषा में नहीं बोलता था, तब तक कोई लाभकारी संदेश प्रकट नहीं किया जाता था। अनुवाद करने के लिये कुछ भी नहीं होता है यदि अर्थहीन पाठ्यक्रम उत्साहजनक शब्दों में व्यक्त किए गए हैं, जो इसके विषय होते थे। कुरिन्थियों की पौलुस के निर्देशों की समझ, भाषाओं का वरदान क्या था जो उसकी समझ के बारे में निर्भर करता था। आधुनिक पाठकों के लिये भी यह सही है।

आयत 14. पौलुस ने सर्वनाम को उत्तम पुरुष में बदल दिया ताकि वह अपने पाठकों के साथ अधिक बारीकी से पहचान कर सके। प्रेरित का अर्थ था कि जब कोई ऐसी भाषा में प्रार्थना करता है जिसे कोई अन्य नहीं समझता, तो कोई बातचीत नहीं, कोई प्रशंसा नहीं, और कोई उपदेश पूरा नहीं हो सकता। कम से कम, जहाँ तक कलीसिया सभा का सम्बन्ध था, इनमें से कोई भी नहीं हो सकता था। जो व्यक्ति बोलता है वह स्वयं में उत्साह की भावना महसूस कर सकता था क्योंकि वह जानता था कि पवित्र आत्मा उसकी **आत्मा** के माध्यम से बोल रहा था, परन्तु वास्तविक भलाई पूरी की जा सकती है किसी भी प्रकार का विस्तार नहीं किया जा सकता था। वह क्या जानना चाहता था कि सुननेवालों की बुद्धि में कोई फर्क न पड़े। सबसे अच्छा, बोलनेवाला स्वयं परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता था जो फलदायी था, जहाँ तक उसकी अपनी "आत्मा" का सम्बन्ध था। एक दृढ़ विश्वास से, उसकी आत्मा परमेश्वर के सामने शब्दों को उंडेल सकता था, परन्तु उन लोगों के मन में कोई उन्नति नहीं होगा, न ही कोई फल लाएगा, क्योंकि वे लोग जो उन्हें सुनते थे उसके शब्दों को नहीं समझ पाते थे।

पौलुस को विश्वासियों की **बुद्धि** (νοῦς, *नूस*) से उत्पन्न होनेवाली प्रार्थना की अपेक्षा थी जो फल लाए। जो सीमित अर्थ में प्रार्थना करता था, परन्तु सामान्य रूप से फल उस व्यक्ति के बुद्धि से कहीं अधिक उत्पन्न होता था जो बोल रहा होता था। पौलुस का तात्पर्य था कि जब कोई अन्य भाषा में प्रार्थना करता था जिससे उसके सुननेवाले अनभिज्ञ होते थे, तो उसने जो भी कहा था, वे जिन्होंने उसे सुना उसके लिये कोई फल नहीं लाएगा। उसकी "बुद्धि" "काम नहीं" देगी; परिणामस्वरूप सुननेवालों ने "आमीन" (14:16) के रूप में प्रत्युत्तर नहीं दे पाएँगे। वे अपनी अपनी प्रार्थनाओं को उस व्यक्ति के शब्दों से जोड़ नहीं पाएँगे जिसके शब्दों को वे समझ नहीं सकते थे। पौलुस यह संकेत दे रहा था कि सभा में आराधना एक सामुदायिक प्रस्तुति थी, न कि एक व्यक्तिगत कार्य।

आयत 15. अभी भी उत्तम पुरुष में लिखते हुए, पौलुस ने समझ के महत्व पर बल दिया। उसने ज़ोर देते हुए कहा कि आत्मिक वरदान के प्रयोग से कोई भी भावनात्मक लाभ से हुआ करता था, कि वरदान परमेश्वर की महिमा करने के

समझ से था। प्रेरित ने स्वयं को सभी मसीहियों के प्रतिनिधि के रूप में बताया था, जब उसने लिखा, **मैं प्रार्थना करूँगा** (προσεύξομαι, *प्रोसुक्सोमाई)* **और मैं गाऊँगा** (ψαλῶ, *प्सालो)*। उसने कहा कि वे इन गतिविधियों में भाग लेंगे जो दोनों **आत्मा** और **बुद्धि** में लगे हैं। समझना और भावनात्मक उत्साह परस्पर एक साथ नहीं होते हैं; परन्तु, ऐसा लगता है कि कुरिन्थ के लोग पहले भावनात्मक हलचल की माँग कर रहे थे, या वे समझ की कीमत पर भावुकता की माँग कर रहे थे। पौलुस नम्र था, परन्तु अपने आग्रह में लगातार बना हुआ था कि इस तरह के विषय पर चलना आत्मिक आपदा के साथ छेड़खानी थी। चाहे विषय प्रार्थना या गीत था, पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों से आग्रह किया कि उन्हें समझ के ढाँचे के भीतर आराधना करने में अभिव्यक्त किया जाए।

बाइबल के गीत स्तुति, धन्यवाद और विनती के तर्कसंगत अभिव्यक्ति हैं। इस्राएल के भजन में, साथ ही मरियम और जकर्याह के गीतों को लूका 1:46-55, 67-79 उदाहरणों के रूप में देखा जाता है। कुरिन्थ के गायन को अन्य किसी प्रकार के रूप में समझने के लिये कोई विवशता का कारण नहीं दिया जा सकता है। अनुवाद के लिये पौलुस की सलाह केवल तब समझ में आती है यदि कुरिन्थ के गायन और भाषाएँ समझा जा सके। यदि गायन और भाषाएँ व्यर्थ बड़बड़ाना था, तो पौलुस प्रत्येक को तर्कसंगत विचारों में अनुवाद करने की अपेक्षा नहीं कर सकता था।

आयत 16. मसीही सभा में भाषाओं के लिये प्रेरितों की अपेक्षाएँ मूर्तिपूजकों की अपेक्षाओं से बिल्कुल भिन्न थीं। मूर्तिपूजक पंथिक समुदाय में कोई भी उत्साहजनक बोलनेवालों के शब्दों की अनुवाद नहीं की गई ताकि सुननेवालों के समुदाय को प्रोत्साहित किया जा सके (14:4) या **आमीन** को जोड़ा जाए। पौलुस ने अपने पाठकों को अपने निर्देश पर ध्यान देने का सलाह दिया कि देह के निर्माण के लिये अन्य भाषाओं की अनुवाद की जानी थी।

मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में अन्य भाषाओं का अनुवाद नहीं किया गया, कम से कम एक वास्तविक भाषा से दूसरे भाषा में अनुवाद करने की भावना से नहीं। भविष्यद्वाणियों द्वारा दिए गए इस प्रकार के संदेशों में से एक डेल्फी में दिया गया जिसका उद्देश्य भविष्य के बारे भविष्यद्वाणी करने से था, ये विश्वासियों के देह को प्रोत्साहित करने के लिये नहीं थे। उन्मादी गतिविधि, उन्मादी भाषण सहित मूर्तिपूजक सम्प्रदायों से जुड़ी हुई थी, जो उन दुर्व्यवहारों के लिये जानी जाती थीं जिन्हें उन्होंने प्रोत्साहित किया था। पौलुस मसीही सभा में इस तरह के मूर्तिपूजक आराधना अभ्यास को अपनाना नहीं चाहता था। यदि कुरिन्थ में आराधना सेवाओं में भाषाओं की घटना ने चमत्कारिक ढंग से वास्तविक भाषा सीख लिया था, तो मूर्तिपूजक उत्साही कथन के समानता केवल ऊपरी और महत्वहीन मामलों से सम्बन्धित हैं।

अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति अन्य भाषा में बोलने पर आत्मा के प्रभाव के तहत परमेश्वर को आशीष देता है या किसी अन्य व्यक्ति पर आशीष देता है, परन्तु कुछ सुननेवालों द्वारा इसे अनभिज्ञ किया जाता है। शब्द ἰδιώτης

(इडिओतेस), जिसे NASB में **नहीं जानता** अनुवादित नहीं किया गया है, को "अज्ञानी" या "अनभिज्ञ" के रूप में बेहतर ढंग से समझाया जा सकता है। यह शब्द 1 कुरिन्थियों 14:16, 23, 24 में प्रकट होता है; और इससे परे, यह नया नियम में केवल दो बार पाया जाता है (प्रेरितों के काम 4:13; 2 कुरिन्थियों 11:6)। अपने सभी घटनाओं में, यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसे किसी तरह से अप्रशिक्षित किया जाता है। उदाहरण के लिये, एक बढ़ई, चिकित्सा विज्ञान के सम्बन्ध में चिकित्सक द्वारा *इडिओतेस* ("अज्ञानी") के रूप में वर्णित किया जा सकता है। प्रेरितों के काम 4:13 में, पतरस और यूहन्ना को व्यवस्था में "अज्ञानी" माना जाता था; यही है, यहूदियों को एहसास हुआ कि वे व्यवस्था का अनुवाद करने में अशिक्षित थे। 2 कुरिन्थियों 11:6 में पौलुस ने ध्यान दिया कि कुछ लोगों ने उसे "अज्ञानी" बोलनेवाला कहा।

1 कुरिन्थियों 14 में अपने तीन घटनाओं में, शब्द उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो समझने में अज्ञानी था जब एक मसीही सभा में कोई अन्य भाषा में बात करता था। ऐसा व्यक्ति एक अविश्वासी व्यक्ति हो सकता है, या हो सकता है कि वह खड़ा रहकर सुननेवाला व्यक्ति हो। वह एक इच्छुक श्रोता की **जगह को भरता** था, न कि विश्वासी के रूप में, बल्कि अविश्वासी के रूप में भी नहीं। जिन लोगों ने एक आत्मिक रूप से वरदान पाए मसीही को अन्य भाषा में बोलते हुए सुना था और जिसे वे समझ नहीं पाते थे, उनके पास बोलनेवाला के साथ अनुबंध या असहमति का कोई आधार नहीं होता था। इस कारण से, उन्हें *इडिओतेस* के रूप में वर्णित किया गया है; अर्थात् यह कि वे जो कुछ भी सुन चुके थे, उनका आकलन करने में असमर्थ रहे होंगे और "आमीन," कहने की स्थिति में नहीं रहे होंगे, जो कि **धन्यवाद** या प्रशंसा की भेंट चढ़ाए जाने से अनभिज्ञ होते थे। पौलुस के सुसमाचारवादी आवेग सतह पर आ चुके थे। उसकी दृष्टि में, अज्ञानी दर्शक "आराधना में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है"[6] (देखें 1 कुरिन्थियों 14:23)। यह सच है क्योंकि जो कहा जाता है यदि ऐसे व्यक्ति को समझ नहीं आता है, तो संदेश - चाहे कितना भी चमत्कारिक हो - उसका कोई अर्थ नहीं होगा।

आयत 17. आत्मा के प्रभाव के अधीन कोई प्रार्थना, आशीष या प्रशंसा प्रदान कर सकता था जो पूरी तरह उपयुक्त थे। वरदान पाया हुआ व्यक्ति जो किसी अन्य भाषा में बात करता था, उन्नति प्राप्त करता था, यह मानते हुए कि वह अपने शब्दों के अर्थ को समझता था। रूचि रखनेवाला दर्शक अर्थात् *इडिओतेस,* की **उन्नति** नहीं किया जा सकता था, यदि वह जिन शब्दों को सुनता था, उन्हें नहीं समझता था। इस उदाहरण में, अन्य भाषाओं में बात करना देह निर्माण के लिये कुछ नहीं करेगा। सुसमाचार के साथ गैर-मसीहियों तक पहुँचने के लिये भाषा तब बाधा बन जाएगी।

आयत 18. पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि कुरिन्थियों को उनके आत्मिक वरदानों के उपयोग से सम्बन्धित निर्देश, विशेष रूप से अन्य भाषाओं में बोलना, ईर्ष्या से प्रेरित नहीं थे। यद्यपि यह ऐसा नहीं था कि उसे स्वयं भाषाओं के वरदान की कमी थी। उसने अन्य भाषा में अद्भुत रीति से बात की

जैसा कि उसने चुना था, और उन भाइयों ने जो किया उसकी तुलना में अधिक स्वतंत्रता के साथ उसने किया था। एक प्रेरित के रूप में, पौलुस किसी भी भाषा में एक अवसर की आवश्यकता के लिये बोल सकता है। इसके विपरीत, उसके पाठकों को स्पष्ट रूप से एक या दो भाषाओं तक सीमित कर दिया गया था। इसी लिये, पौलुस कह सकता है, **मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।** ऐसा नहीं था कि वह उनमें से किसी की भी तुलना में अधिक स्पष्टता से अन्य भाषा में बोल सकता था, परन्तु पवित्र आत्मा ने उसे भाषा के उपयोग में अधिक व्यावहारिक होने की अनुमति दी थी।

आयत 19. भाषाओं और भविष्यद्वाणियों के बारे में चर्चा का अवसर पहले **कलीसिया में** आचरण के बारे में था (देखें 14:28)। पौलुस के वाक्यांश ἐν ἐκκλησίᾳ (*एन एकलेसिआ,* शाब्दिक अर्थ, "कलीसिया में") का प्रयोग केवल 1 कुरिन्थियों 11:18; 14:19, 28, 35 में किया था। शब्द ἐκκλησία *(एकलेसिआ)* का अर्थ "सभा" है; संदर्भ इंगित करता है कि यह एक ऐसा वाक्यांश है जो एकसाथ इकट्ठे हुए मसीहियों के लिये प्रयोग किया जाता था जो आराधना के लिये एकसाथ इकट्ठे होते थे।[7] पौलुस अन्य परिवेश में अन्य भाषा के कार्य और मसीही सभा में उनके उपयोग के बीच भेद करते हुए प्रतीत होता है।

नया नियम में अन्य भाषाओं का वरदान निश्चित रूप से वास्तविक भाषाओं में अद्‌भुत रीति से बोलने की योग्यता थी, बोलनेवाले ने जिसे सामान्य तरीकों से नहीं सीखा था। पौलुस अन्य भाषा को सार्वजनिक स्थानों पर सिखाने के लिये उपयोगी रूप में देखता है जहाँ बोलनेवाला उन लोगों से मिल सकता था जिनके साथ और कहीं बात नहीं कर सकता था (14:22)। ऐसे सार्वजनिक स्थानों में, प्रेरित ने अपने वरदान का उपयोग किया; परन्तु उसने इसका उपयोग "कलीसिया में" केवल तभी किया जब इसके लिये विशेष अवसर था। "कलीसिया में" पौलुस की चिन्ता, साथी विश्वासियों को निर्देश देने, प्रोत्साहित करने और सिखाने से था, वह कितना आत्मिक था या कितनी आत्मा ने उसे अन्य भाषा के अभ्यास के द्वारा आशीष दी थी, यह दिखाने के लिये नहीं था। इन्हीं कारणों से, प्रेरित ने कहा कि "कलीसिया में" दूसरों का निर्देशन करने के लिये वह अन्य भाषा के हज़ारों शब्दों को बोलने के बदले जिन्हें उसके साथी मसीही नहीं समझते पाँच शब्दों को बोलना उचित समझता था। पौलुस द्वारा चयनित इस विशेष संख्या का कोई निजी अर्थ नहीं है। उसका महत्व केवल इतना ही है कि उनसे बुद्धिमानी की और अर्थहीन बातों को बोलने के बीच एक बड़ा अन्तर को बताने में सहायता मिली।

आराधना और सामुदायिक चेतना (14:20-25)

[20]हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो: बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो। [21]व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, "मैं अपरिचित भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूँगा

तौभी वे मेरी न सुनेंगे।" 22इसलिये अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिह्न हैं; और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु विश्वासियों के लिये चिह्न हैं। 23अत: यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य भाषाएँ बोलें, और बाहरवाले या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएँ तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? 24परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे; 25और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे, और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

कलीसिया के अन्य मामलों की तरह, कलीसिया की मण्डली में आत्मिक वरदानों का प्रयोग विरोधाभास में योगदान दे रहा था। कुछ मसीहियों ने दूसरों की तुलना में आधुनिक शिक्षा पर अधिक महत्व दिया है (1:26, 27; 4:8)। संगति भोज में, जो लोग धनी होते थे वे स्वयं को, नम्र निम्न लोगों से अलग रखते थे। अधिक आधुनिकता से, सदस्यों द्वारा विभिन्न भाषाओं में बोलने और भविष्यद्वक्ताओं में सबसे ऊँचा या सबसे प्रभावशाली होने के लिये प्रतिस्पर्धा करने के कारण क्लेश उत्पन्न हो गया। पौलुस ने कुरिन्थ के उन लोगों के व्यवहार और अभ्यासों में गलती पाई जो अधिक ज्ञानवान और धनवान थे। मण्डली में परस्पर विचार के मामले में, उसने उन लोगों की स्थिति को स्वीकार किया, जो उचित पद के लिये उपयुक्तता का स्तर चाहते थे। मसीहियों के लिये परमेश्वर में शिक्षा प्राप्त करने और एक दूसरे के लिये आपसी सम्मान में वृद्धि करने के लिये, कलीसिया को सहयोग की भावना से कार्य करने के लिये सीखने की ज़रूरत है।

एक समुदाय के रूप में आराधना करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और वरीयताओं को सभी की आवश्यकताओं के साथ मिश्रित करने की आवश्यकता होती है। पौलुस ने परिपक्वता की भाषा में अपनी अपील व्यक्त की। प्रत्येक व्यक्ति को एक देह के रूप में कलीसिया की आवश्यकताओं के लिये निजी मामलों को अलग करना था।

आयत 20. पौलुस ने कलीसिया से आग्रह किया कि वे [अपनी] **समझ में बालक न बने**। नया नियम में, बच्चे दोनों सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों के लिये जाने जाते हैं। जब चेलों ने यीशु से स्वर्ग के राज्य की महानता के बारे में पूछा, तो उसने एक बच्चे को लिया और शिष्यों के सामने उसे कहा, "जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा" (मत्ती 18:1-4)। कुछ गुण जो बालकों की विशेषताएँ हैं, वे मसीही अनुकरण के योग्य हैं; अन्य नहीं हैं।

आधुनिक अंग्रेजी में, "बालक के समान" और "बचकाना" के अर्थ में बहुत भिन्नता है। कुरिन्थियों के मसीही अपनी समझ और व्यवहार में बचकाना बन गए थे। उन्हें अपने बचकानापन से बाहर निकलने की ज़रूरत थी और साथ ही बालक के समान बने रहने को बनाए रखना था। **बुराई** ("मलीनता"; KJV) के

सम्बन्ध में, एक बालक के समान होना अच्छा होगा, परन्तु समझने के सम्बन्ध में नहीं। प्रेरित कह रहा था, "समझ में सियाने बनो"।

जब मसीही एक-दूसरे के निर्देश पर ध्यान देने या इनकार करते हुए अपने साथी विश्वासियों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं तो वे बच्चों के समान काम करते हैं। परिपक्वता यह माँग करती है कि मसीही सभा में इस रीति से व्यवहार करें कि दूसरों की उन्नति हो। जब विश्वासी एक-दूसरे की बात सुनते हैं और एक-दूसरे को सही करने के लिये तैयार होते हैं तो परमेश्वर की महिमा होती है। परिपक्वता समुदायिक-चेतना की माँग करती है। व्यक्तिगत उन्नति देह की उन्नति से दूसरे स्थान पर होना चाहिए। सामुदायिक चेतना कलीसिया की सार्वजनिक आराधना में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

आयत 21. पौलुस ने यशायाह 28:11, 12 को **व्यवस्था में लिखा है** के साथ उद्धृत किया है। उसने व्यवस्था को पंचशास्त्र तक सीमित नहीं किया। भविष्यद्वक्ता, परमेश्वर की वाचा को लागू करनेवाले के रूप में होते थे। फिर भी, यशायाह 28:11, 12 की प्रासंगिकता कुरिन्थ की स्थिति से पूरी रीति से स्पष्ट नहीं है। यशायाह इस्राएल के लिये परमेश्वर की चेतावनी की बात कर रहा था, ऐसे लोगों का उपयोग करते हुए जिसकी भाषा वे नहीं समझते थे। **अपरिचित भाषा** के बारे में भविष्यद्वक्ता के संदर्भ ने पौलुस के मन में इस अनुच्छेद का विस्तार किया। कुरिन्थ की स्थिति इस्राएल के सामने सात सौ वर्ष पहले की तुलना में अलग थी, फिर भी परमेश्वर इतिहास में उस पल में "अपरिचित भाषा" का प्रयोग कर रहा था। इस्राएल के समान, कुरिन्थियों ने भाषा के माध्यम से परमेश्वर के संदेश पर ध्यान नहीं दिया। यशायाह में, यह स्पष्ट है कि भविष्यद्वक्ता के मन में मानवीय भाषाओं को ध्यान में रखा गया था। बड़ी अच्छी बात होगी कि कुरिन्थ की भाषा को भी वास्तविक भाषा के समान समझना चाहिए।

नया नियम के लेखकों ने कभी-कभी शब्दों के मेल के कारण मुख्य रूप से पुराने नियम का उद्धरण दिया। पुराने नियम में लिखे गए अनुच्छेद का शब्दनुरुपण नये परिवेश के लिये उपयुक्त था, यद्यपि पुराने नियम का अनुच्छेद बिल्कुल उसी तरह की स्थिति का वर्णन नहीं कर रहा था। जैसा कि इस्राएल को अपरिचित भाषाओं से चेतावनी दी गई थी, कुरिन्थियों के मसीहियों को पौलुस की भाषाओं के वरदान के दुरुपयोग से सम्बन्धित चेतावनी को सुनना ज़रूरी था जिसे पवित्र आत्मा ने कलीसिया की उन्नति के लिये दिया था।

आयत 22. पवित्र आत्मा ने कुरिन्थियों के कुछ मसीहियों को उन सामान्य भाषाओं में बोलने की चमत्कारिक योग्यता के साथ सम्पन्न किया था, जिन्हें उन्होंने सामान्य तरीके से नहीं सीखा था। यदि "अविश्वासियों" (ἄπιστος, *एपिसतोस)* मसीही सभा में होते थे और अपनी मूल भाषाओं में सुसमाचार का प्रचार करते हुए सुने जाते (कुरिन्थियों 2:7, 8) तो यह एक आश्चर्यजनक संकेत होगा कि ईश्वरीय शक्ति इन लोगों में काम कर रही थी। पौलुस के तर्क का अभिप्राय थोड़ा ही होता, यदि कुरिन्थ में भाषाओं का बोलना उत्साहपूर्ण कथन

के बराबर होता। असंगत, भावुक आवाज़ किसी भी बात का संकेत नहीं होगा है परन्तु बाहरवाले जो ध्यान देते हैं या "अज्ञानी" व्यक्ति (ἰδιώτης, *इडीओतेस;* 14:16, 23, 24) के लिये समस्या होगा।

दूसरी ओर, एक मसीही के लिये अद्‌भुत रीति से अन्य भाषा में बात करने में योग्य होना, परन्तु उसकी इच्छा पर उन लोगों के लिये एक वास्तविक चिह्न होगा जो केवल मसीह के सुसमाचार में थोड़ा सा रूचि रखते थे। पौलुस ने कहा, **विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये, भाषाएँ चिह्न के लिये** थे। इसके विपरीत, मण्डली में विश्वासियों की उन्नति के लिये भविष्यद्वाणी एक वरदान था। कुरिन्थियों ने एक दूसरे को प्रभावित करने के लिये आत्मा के अन्य भाषा में बोलने का वरदान का उपयोग किया। इस प्रक्रिया में, वे सुसमाचार के महत्व को कम कर रहे थे।

आयत 23. प्रेरित ने 12:30 में एक तर्कसंगत प्रश्न के साथ अपना मुद्दा स्पष्ट किया: "क्या सब नाना प्रकार की भाषा नहीं बोलते हैं, क्या वे बोलते हैं?" कुरिन्थ की कलीसिया में अन्य भाषा बोलने वालों की संख्या बहुत कम थी। पौलुस अतिशयोक्ति का प्रयोग कर रहा था जब उसने यह अनुमान लगाया कि मण्डली में उपस्थित एक अविश्वासी व्यक्ति देखेगा कि **सब के सब अन्य भाषाएँ बोलते** हैं। प्रेरित ने निश्चित रूप से अपेक्षा नहीं की थी कि सभा में सभी अन्य भाषा में बोलने में योग्य हो, परन्तु अनेकों के पास यह योग्यता थी। इसके अलावा, जो अद्‌भुत रीति से बात करते थे वे एक ही समय में ऐसा कर रहे थे। यदि बाहरवाले उपस्थित होते थे जब **कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो,** और उन कई लोगों विभिन्न भाषाओं में बोलते हुए देखते थे जिन्हें वे समझ नहीं पाते थे, तो वे यह निष्कर्ष निकालना चाहते थे कि विश्वासियों ने अपनी समझ खो दिया था, या **पागल** हो गए थे। अविश्वासियों को मसीह में विश्वास रखने के लिये भाषा एक चिह्न था; परन्तु जिस रीति से कुरिन्थियों ने उनका प्रयोग किया था, उनके विपरीत प्रभाव पड़ रहे थे।

एक समुदाय एक आम सहमति, मिशन और जीवन के मार्ग की आवश्यकता से एक साथ मिलते थे "इकट्ठे होते" (συνέλθῃ, *सुनेलथे)*; परन्तु NASB अंग्रेजी का अनुवाद इस तरह की मण्डली बारे में महत्वपूर्ण जानकारी को बिना अनुवाद किए छोड़ देता है। यूनानी मुहावरा ἐπὶ τὸ αὐτὸ *(एपी तो औतो)* का अर्थ है "एकसाथ"; और इसी शब्द का संयोजन मत्ती 22:34 और लूका 17:35 में मिलता है, प्रेरितों के काम (1:15; 2:1, 44, 47; 4:26) में पाँच बार और 1 कुरिन्थियों में तीन बार (7:5; 11:20; 14:23) पाया जाता है। इस वाक्यांश का प्रयोग साधारण मन और उद्देश्यों पर ध्यान देने के लिये किया गया था जो उनके द्वारा पूरा किया गया जो एकसाथ इकट्ठे होते थे।[8] लूका ने ये शब्द प्रेरितों के काम में प्रयोग किए थे, जो यरूशलेम की कलीसिया के द्वारा शुरुवाती दिनों में अनुभव किए गए मन और बुद्धि की एकता को इंगित करता है। पौलुस ने 7:5 में पति और पत्नी के पुनर्मिलन, साथ ही साधारण बंधन और आराधना के लिये इकट्ठे हुए लोगों की साझा सहमति के बारे में बात करते हुए कहा (11:20;

14:23)। प्रेरित की चिन्ता यह थी कि कई सदस्यों को एक बार में भाषाओं में बोलने की अनुमति एक बार सभा के सामान्य उद्देश्य के लिये हानि की बात थी।

इसके विपरीत, जब कई लोग एक साथ एक ही समय में विभिन्न भाषाओं में बोलते थे तो भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, भविष्यद्वाणी का वरदान सिखाने के लिये उपयुक्त था। आराधना करनेवाले चाहे विभिन्न भाषाओं में या भविष्यद्वाणियों में बात कर रहे थे, परन्तु पौलुस ने आदेश पर ज़ोर दिया (14:27-31)। प्रेरित ने अभी अभी कहा था कि भविष्यद्वाणी विश्वासियों के लिये थी (14:22), परन्तु उसने इनकार नहीं किया कि यह अविश्वासियों पर सच्चाई को प्रभावित करने के लिये एक साधन भी हो सकता है। यदि वह अपेक्षा नहीं करता था कि अविश्वासी लोग "सभी" सदस्य को अन्य भाषाओं में बोलते वास्तव में सुने, और न ही वह आशा करता था कि वे "सभी भविष्यद्वाणी" को सुनें (14:24)। प्रेरित का विरोधाभास यह था: गैर-मसीही संदेश को समझ सकते थे जब वे भविष्यद्वाणी को सुनते थे। उन्हें विश्वास करने, मसीह का पालन करने, या उनके नैतिक जीवन में सुधार करने के लिये चुनौती दी जा सकती थी। परन्तु, जब उसने कई सदस्यों को एक ही समय में अपरिचित भाषाओं में बोलते हुए देखा, तो दृश्य पर गड़बड़ी की उपस्थिति दिखाई दिया। सरल शब्दों में अविश्वासियों को "दोषी" माना गया; लगता है वे समझ नहीं सकते थे वे भौचक्का रह जाते या चकित हो जाते थे।

आयत 24, 25. कोई भी भविष्यद्वाणी के प्रभाव से अपेक्षा कर सकता है कि एक अविश्वासी व्यक्ति पर, जो कि 14:25 में दर्शाया गया है: **और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे, और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा।** गैर-मसीही के मन तक पहुँचने का मार्ग उसके मन, उसके समझ के माध्यम से था। जब उसने भविष्यद्वाणी के शब्दों को सुना, उसने परमेश्वर को उन शब्दों के माध्यम से काम करते देखा जिसे वह समझ सकता था, तो उसे सुसमाचार की सच्चाई का दोषी ठहराया जाएगा। तब वह दण्डवत् करेगा और गवाही देगा, **और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है**।

गॉर्डन डी.फी ने पाया कि अध्याय 14 दो हिस्सों में पाया जाता है, 1 से लेकर 25 आयत, "*सभा में बुद्धि की पूर्ण* आवश्यकता" और 26 से लेकर 40 आयत "*सभा में व्यवस्थित क्रम की पूर्ण* आवश्यकता" के विषय में बताती है।[9] बुद्धिमानी महत्वपूर्ण था क्योंकि सभा से अपेक्षित परिणाम विश्वासियों को सिखाने या उनकी उन्नति करने के लिये किया गया और अविश्वासियों को उनके पाप और मसीह की आवश्यकता के लिये दोषी ठहराया गया था। उद्देश्य चाहे प्रोत्साहन या निर्देशन करने का था, जो मसीह का प्रचार करते थे, उन्होंने यह कहते हुए शुरुवात नहीं किया, "यहाँ, आपको यह अनुभव करना चाहिए।" उन्होंने यह कहते हुए शुरुवात कि, "यहाँ, आपको इसे समझना होगा।" प्रोत्साहन, निर्देशन, और उन्नति के लिये बुद्धि की आवश्यकता होती है। पौलुस ने अध्याय 14 में शब्द के इन रूपों का प्रयोग सात बार किया है जिसका अर्थ "उन्नति करना" या "उन्नति" है।[10]

न प्रेरितों के काम में और न ही नया नियम की पत्री में आराधना के लिये इकट्ठे होने वाले शुरुवाती कलीसियाओं के बारे में जानकारी के बारे में बहुत कुछ बताया गया है। सार्वजनिक रूप से पुराने नियम को पढ़ना या सम्मानित शिक्षकों के उपदेशों को पढ़ने के लिये विचार किया जा सकता है (कुलुस्सियों 4:16; 1 तीमुथियुस 4:13)। जगह जगह पर जानेवाले भविष्यद्वक्ता और सुसमाचार प्रचारक, जब वे हुआ करते थे शायद उन्नति के लिये और सिखाने के लिये शब्दों को बोलते थे (प्रेरितों के काम 20:7)। शायद हमारे पास उनके गीतों और प्रार्थनाओं के कुछ भाग पत्रियों में शामिल किए गए हैं। परन्तु, "प्रभु भोज" लेने के लिये प्रभु के दिन पर मण्डली के तथ्य से परे, आज मसीहियों को पहली सदी की कलीसियाओं द्वारा प्रयोग की गई आराधना पद्धतियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं दी गई है। हमें पर्याप्त निर्देश दिए गए हैं, परन्तु सम्पूर्ण जानकारी नहीं दी गई है।

यह बहुत स्पष्ट है: पौलुस कलीसिया की बैठकों के सुगम और व्यवस्थित होने की अपेक्षा करता था। मसीही आराधना के प्रबंधन के लिये विशेष बातों को वे स्वयं प्रस्तुत करते थे जब पौलुस अन्य भाषाओं में बोलने और भविष्यद्वाणी के विपरीत (14:2-6) था, परन्तु यह उसकी मुख्य चिन्ता नहीं थी। 14:26 की शुरुवात विशेष ध्यान देने वाली बातों में परिवर्तन होता है, क्योंकि मसीही सभा में विश्वासियों के आचरण को इस पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। सभा में अनौपचारिकता का व्यवहार बना हुआ लगता था। साथ ही, प्रेरित ने कुल स्वभाव को अधिकृत नहीं किया। व्यवस्थित और विचारशील प्रशंसा पारस्परिक उन्नति को संरचना देता है। भाषा और भविष्यद्वाणियों के सापेक्ष गुणों की तुलना करने के बाद, "आयत 25 में पौलुस ने बुद्धिमानी के लिये चिन्ता से सुव्यवस्थित होने की ओर इशारा किया।"[11]

आराधना में सहभागी होने के निर्देश (14:26-32)

[26]इसलिये हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए। [27]यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। [28]परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से और परमेश्वर से बातें करे। [29]भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें। [30]परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो तो पहला चुप हो जाए। [31]क्योंकि तुम सब एक एक कर के भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें और सब शान्ति पाएँ। [32]और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।

आयत 26. एक कथनात्मक प्रश्न के साथ, पौलुस ने अपने निर्देशों का सारांश प्रस्तुत किया और एक अलग दिशा में आगे बढ़ गया। वास्तव में वह पूछ रहा था, "यह सब कहाँ से मैंने कहा है कि इस बात को हमें बताता है?" सबसे पहले, उसने मण्डली के दौरान होने वाली बातों का नाम रखा। आदर्श रूप से, इन सभी गतिविधियों ने परमेश्वर की प्रशंसा करने और पारस्परिक शिक्षण और प्रोत्साहन प्रदान करने में सहायता की। मसीही समुदाय ने ही मण्डली की गतिविधियों को शुरू किया। **हर एक** व्यक्ति का एक हिस्सा था, परन्तु व्यक्तिगत रूप से विश्वासियों की भूमिका अलग अलग थी। सहभागिता अधिक या कम सक्रिय हो सकती है। कुछ विश्वासियों ने सम्भवतः उन लोगों का समर्थन करने की बात सोची जिन्होंने नेतृत्व करने के लिये पहल की थी।

संगीत में रूचि और योग्यता रखनेवाले मसीही स्पष्ट रूप से सभा में गीतों को आए। कुछ मूल रचनाएँ हो सकती हैं, जबकि अन्य कहीं से ली गई प्रतियाँ या सुनी जाने वाली गीतों की रूपरेखाएँ थीं। जाप के समान गीत या प्रतिक्रियाशील आयतों के प्रयोग की अधिक सम्भावना थी। सामुदायिक गायन की शुरुवात आरम्भ से ही मसीही आराधना से हुई थी (मरकुस 14:26; प्रेरितों के काम 16:25)। कुछ आराधना करनेवाले पुराने नियम से मसीही सभा के लिये **एक भजन** (ψαλμός, *प्सालमोस)* ला सकते हैं, परन्तु यह सम्भव नहीं है कि पौलुस तकनीकी अर्थों में शब्द का प्रयोग कर रहा था। **शिक्षा** या **प्रकाश** जैसे सामान्य शब्दों के साथ भजन की संगति से पता चलता है कि प्रेरितों ने "एक भजन" की स्तुति या भक्ति के किसी भी गीत पर विचार किया होगा। कुछ अवसरों पर, प्रेरितों ने मसीही भजनों से शब्दों को जोड़कर अपनी पत्रियों में लिखा है (देखें फिलिप्पियों 2:6-11; कुलुस्सियों 1:16, 17)। कलीसिया के गायन में जो कुछ भी शामिल हो सकता है, प्रेरित यह सुनिश्चित करना चाहता था कि उसे व्यवस्थित और बुद्धिमानी के द्वारा चित्रित किया गया था।

आत्मा की प्रत्यक्ष देन ने व्यक्तिगत रूप से मसीहियों को कुरिन्थियों की आराधना करने वाले तत्वों को जोड़ने की अनुमति दी जो नये नियम की अवधि के बाद अज्ञात थे। आत्मा ने स्पष्ट रूप से कुछ विश्वासियों को सीधा प्रकाशन दिया। वे इतने धन्य हैं कि उनके संदेश कलीसिया की सभा में शिक्षा और उन्नति के लिये लाए गए थे। पौलुस उन लोगों के लिये प्रसन्न था जो एक वरदान के साथ आशीषित हुए थे ताकि वे मण्डली के दौरान बोल सकें, साथ ही साथ उसने अनुवाद के वरदान को विशेष महत्व दिया था। अन्य भाषाओं से तभी उन्नति होती है जब उनका अनुवाद किया जाता है। प्रेरित "आत्मिक वरदानों के उन अभिव्यक्तियों को विफल करने की कामना करता था जो केवल व्यक्ति विशेष (14:4) की उन्नति करते हैं और उन वरदानों को प्रोत्साहित करने की इच्छा करते थे जिनसे सम्पूर्ण समुदाय की उन्नति होती है।"[12] मण्डली में जो भी हुआ था, वह परमेश्वर की प्रशंसा और विश्वासियों की उन्नति की ओर निर्देशित की जा रही थी (देखें इब्रानियों 10:23-25)।

आयत 27. जो लोग अन्य भाषा में बोलते थे उन्हें **बारी बारी से** ऐसा करने

की ज़रूरत थी। क्योंकि जो व्यक्ति अन्य भाषा में बोलता था, वह अपनी स्वयं की पहल पर वरदान दिखा सकता था, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति से अपने आप को नियन्त्रित करने की अपेक्षा की जाती थी ताकि वह बोल सके या इच्छा के साथ बोलने से बच जाए। पौलुस ने उन लोगों से आग्रह किया जो बोलने के लिये आवेग और बोलने के तरीके को नियन्त्रित करने के लिये वरदान से तृप्त होते थे। स्पष्ट है, किसी भाषा में बोलना एक अनूठा आग्रह नहीं था; यह आत्मा द्वारा अति सामर्थी होने का मामला नहीं था। यदि किसी को भाषा का वरदान मिला, और सभा के दौरान दो या तीन अन्य लोगों ने पहले ही बोलना शुरू किया हो (ἐν ἐκκλησίᾳ, *एन एक्लेसिआ*, "कलीसिया में"; देखें 14:19, 28), तो वह बोलने से बचना था। प्रेरित ने आग्रह किया कि अन्य भाषाओं में बोलने का अभिप्राय सभा में प्रभुता करने की अनुमति देने से नहीं था।

आयत 28. इसके अलावा, यदि कोई सदस्य एक ऐसी भाषा में बोलता था जिसे कोई भी नहीं समझता था, तो उसे केवल एक अनुवाद करनेवाले की उपस्थिति में ही करना था। कुछ मामलों में एक ही व्यक्ति में आत्मा के कई वरदान हो सकते हैं, जिससे कि वह दोनों एक भाषा में बोले और उसने जो कुछ कहा था, बस उसका अनुवाद करे (देखें 14:5)। जबकि यह सच है कि व्याख्या और अनुवाद एक समान नहीं हो सकता है, शब्द διερμηνεύω *(दिएरमेनुओ)* किसी भी प्रक्रिया का संदर्भ ले सकता है।[13] पौलुस ने विशिष्ट अवसर के लिये अर्थ होने का आत्मा-प्रदत्त शब्दों की अपेक्षा की। यदि सुननेवाला अनुवाद नहीं कर सका, और यदि कोई भी भाषा बोलनेवाला नहीं था जो वह बोल रहा था, तो उसे एक अनुवाद करनेवाले की खोज करना था। अनुवाद करनेवाले या तो जो कहा गया था उसका अनुवाद प्रदान करेगा, या वह उसके अर्थ को समझाएगा। पौलुस की सलाह में सम्मिलित दो सिद्धान्त हैं: (1) अन्य भाषाओं का अर्थ होना, और (2) जब तक कि संदेश को अनुवाद नहीं किया जा सकता था, यह किसी के लाभ का नहीं था। आत्मिक वरदान कलीसिया के निर्माण के लिये थे, आत्म-प्रशंसा के लिये सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं। अन्य भाषाओं में बोलना एक व्यक्तिपरक, व्यक्तिगत अनुभव, परमेश्वर के साथ एक रहस्यमय मेल नहीं था।

इस तथ्य को रेखांकित करते हुए कि पौलुस कुछ अनूठा आवेगों का प्रयोग करने वाले वरदान के बारे में बात नहीं कर रहा था, उसने कहा कि जिसको भाषा में बोलने का वरदान था, यदि अनुवाद करने के लिये कोई नहीं था, तो **कलीसिया** *(एन एक्लेसिया)* अर्थात् इकट्ठे हुए कलीसिया **में चुप रहे**। लियोन मॉरिस ने टिप्पणी की, "इससे पता चलता है कि हम 'अन्य भाषाओं' को आत्मा का एक अनूठा आवेग के परिणाम के रूप में नहीं सोच सकते हैं, जिससे मनुष्य को अविश्वसनीय बातचीत में ले जाता है।"[14]

बोलने के लिये आवेग को दबाने से किसी की आराधना बाधित नहीं होती थी। वरदान के साथ व्यक्ति सभा में भ्रम पैदा किए बिना स्वयं के भीतर परमेश्वर से बात कर सकता था। सभी के साथ प्रेरित की धारणा यह थी कि जो अन्य भाषा में बात करता था, वह उसके साथी आराधक के लिये अर्थपूर्ण बात हो।

प्रेरित ने कोई संकेत नहीं दिया कि जो कोई अन्य भाषा में बात करता था, वह बिना अर्थ वाले शब्दों को बोल सकता है जिसके लिये एक अनुवाद करनेवाले उसके अर्थ को समझा सके।

आयत 29. भविष्यद्वाणी का वरदान, अन्य भाषाओं को बोलने के समान है, वरदान पाए हुए लोगों के द्वारा जिसका प्रयोग विवेक के साथ किया जाता था। अन्य भाषाओं के साथ, यह निर्देश नहीं था कि एक ही बार में **भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन को बोलना** चाहिए, परन्तु सभा के दौरान केवल दो या तीन लोगों को बोलना था। कोई भी एक गतिविधि - चाहे अन्य भाषा, भविष्यद्वाणी, गीत या प्रार्थना हो - आराधना मण्डली में स्वयं के द्वारा प्रबल नहीं हो सकता। जब कोई भविष्यद्वाणी करता है, तो **शेष लोग** सम्भवतः विश्वासियों की देह या भविष्यद्वक्ता जो कहा गया था उसे सुने और **उनके वचन को परखें।** अन्य भाषा में जो कुछ भी कहा गया था उसका अनुवाद करना था; भविष्यद्वाणी की जाँच की जानी थी। कलीसिया को हर संदेश को गंभीरता से सुने बिना स्वीकार नहीं करना था। स्पष्ट है, सभी भविष्यद्वाणी, एक ही गुणवत्ता की नहीं थी, और उनमें से सभी ने एक ही वांछित प्रभाव का उत्पन्न नहीं किया था।

क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं ने जो कहा उसकी गुणवत्ता में भिन्नता थी, इसका कारण यह है कि आत्मा ने एक भविष्यद्वक्ता के व्यक्तित्व को नियन्त्रित नहीं किया था, जिस प्रकार एक यांत्रिकी उपकरण को नियन्त्रित करता है। बल्कि, आत्मा ने व्यक्ति के माध्यम से एक संदेश का निर्माण करने के लिये काम किया। क्योंकि व्यक्ति स्वयं संदेश के निर्माण में शामिल था, गुणवत्ता में अन्तर की अपेक्षा की जानी थी। एक अलौकिक प्रदत्त वरदान का प्रयोग उन विकल्पों के चयन और निर्णयों में शामिल होता था जो पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त होने वाले व्यक्ति के बुद्धि से उत्पन्न होते थे।

आयत 30. यदि कोई भविष्यद्वक्ता बोल रहा था और **जो बैठा** था, **कुछ ईश्वरीय प्रकाश** हुआ, तो पहले भविष्यद्वक्ता को दूसरे को स्थगित करना था। किसी के पास स्वयं के लिये हर समय होने पर ज़ोर देने का अधिकार नहीं था। किसी के पास परमेश्वर के संदेशों पर एकाधिकार नहीं था। सभा में व्यवस्थित क्रम शिष्टाचार के प्रदर्शन को बताता था। अच्छी व्यवस्था अन्य भाषाओं में बोलने, भविष्यद्वाणी करने, या गीत गाने में प्राप्त अवसर से गर्व करने वाले व्यक्ति को पवित्र आत्मा ने उसे दिया वरदान पर ध्यान देने से रोकता था। कलीसिया को दूसरों से भी वरदानों और संदेशों की आवश्यकता थी।

आयत 31. पौलुस ने संकेत दिया कि मण्डली में एक समस्या थी; शायद एक या दो व्यक्ति बोलना शुरू कर दें और किसी और को यह विशेषाधिकार देने से इनकार कर दें। प्रेरित ने कहा कि प्रत्येक भविष्यद्वक्ता को अपना अवसर लेना चाहिए। उसने कहा, **तुम सब एक एक कर के भविष्यद्वाणी कर सकते हो।** इस तरह, **ताकि सब सीखें और सब शान्ति पाएँ।** प्रेरित आग्रह कर रहा था कि एक भविष्यद्वक्ता को अपनी भविष्यद्वाणी के स्व-मूल्यांकन किए गए महत्व को सामान्य सौजन्य से डूबने नहीं देना चाहिए।

आयत 32. अंग्रेजी NRSV का अनुवाद है, "और भविष्यद्वक्ताओं की आत्माएँ भविष्यद्वक्ताओं के अधीन हैं" (see KJV)। इन शब्दों को दो तरीकों से अनुवाद किया जा सकता है। एक सुझाव यह है कि एक भविष्यद्वक्ता ने आत्मा द्वारा दिए गए वरदान को प्रयोग करने के लिये चुना था। फिर से एक महत्वपूर्ण यह तथ्य सामने आता है कि भविष्यद्वाणी करने के लिये आवेग एक व्यक्ति को अधिक शक्तिशाली नहीं करता है। भविष्यद्वक्ता की अपनी आत्मा, यहाँ तक कि जब पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, भविष्यद्वक्ता के अधीन था। अन्य भाषा में बोलने वाले व्यक्ति के लिये यह वही वास्तविक सच था। बोलनेवाले स्वयं को नियन्त्रित कर सकते थे; वे किसी और को स्थगित कर सकते थे। कोई भी इतना पवित्र नहीं था कि वह स्वयं में सभी अच्छी बातों को रख सके जिसे कलीसिया से कहा जा सके।

भी उदाहरण में "भविष्यद्वक्ताओं" के पहले यूनानी में कोई आलेख NASB के अनुवादकों ने शब्दों को अलग तरह से लिया। उन्होंने वाक्य को इस प्रकार से कहा, ... **भविष्यद्वक्ताओं की आत्माएँ भविष्यद्वक्ताओं के वश में हैं।** वास्तव में, किसी नहीं दिखाया गया है। NASB सुझाव देता है कि एक भविष्यद्वक्ता दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के विरोध के प्रभाव के वश में होता था जब वह बोलता था। NASB एक अच्छा अनुवाद देता है, परन्तु यूनानी में आलेख का उपयोग न करना निश्चयपूर्ण नहीं है। संदर्भ को अर्थ का निर्धारण करना चाहिए, और यह संदर्भ पहली समझ के पक्ष में महत्वपूर्ण होता है: पौलुस भविष्यद्वक्ताओं को संयम दिखाने का आग्रह कर रहा था।

आराधना में स्त्रियों को दिए निर्देश (14:33-36)

33क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। 34स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। 35यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है। 36क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला है? या केवल तुम ही तक पहुँचा है?

आयत 33. आयत विभाजन 14:34-36 के लिये भ्रम को उत्पन्न करता है। गड़बड़ी करना परमेश्वर के स्वभाव में नहीं है। जब उसके लोग एक भ्रमित, विचित्र रीति, अव्यवस्थित ढंग से व्यवहार करते हैं, तो वे शान्ति के परमेश्वर का अपमान करते हैं। वह **गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है**। यह विचार प्रेरित के निर्देशों को पिछले कई आयतों में उचित निष्कर्ष देता है, परन्तु अन्तिम वाक्यांश के बारे में क्या कहता है? क्या यह पिछले निर्देश के सारांश का हिस्सा है, या क्या यह परिचय है जिसका अनुसरण करना है?

NASB ने अन्तिम वाक्यांश को, पहले से जो कहा था, उसके लिये पौलुस के

समापन कथन का विस्तार माना है। सामान्य रूप से 1 कुरिन्थियों के यूनानी अनुवाद के सम्पादकों और बड़ी संख्या में अंग्रेजी अनुवादों (NRSV; NIV 1984, ESV) ने 14:33 को अलग-अलग तरीके से विभाजित किया है। वे इस आयत को विभाजित करते हैं ताकि "जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में" पृष्ठ का भाग एक नया शुरू हो जाता है जो सभा की व्यवस्थित और अव्यवस्थित रूप के सामान्य विषय को जारी रखता है। 14:33 के माध्यम से नये पैराग्राफ की शुरुवात के लिये अच्छे कारणों को दिए जा सकते हैं। पौलुस ने इस बिंदु पर सभा में स्त्रियों के विषय को सामने रखा, क्योंकि स्त्रियों के कारण कुछ गड़बड़ियाँ उत्पन्न हो रही थी जो मुख्य स्थानों के लिये प्रतिस्पर्धा कर रही थीं। उसने कुरिन्थ में कलीसिया के लिये अनिवार्य रूप से अपील की कि वे वैसा ही काम करें जैसे अन्य स्थानों की कलीसिया ने किया था। प्रभु की कलीसिया की सभा को एक दूसरे से सीखना है।

आयत 34, 35. सभा में स्त्रियों के चुप रहने की शुरुवात अचानक होती है जब तक पाठक यह नहीं समझता कि "जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है" पिछले निर्देश को जोड़ता है जो पालन करता है। NRSV और अन्य अनुवादों में यह सही लगता है: नया अनुच्छेद 14:33 के मध्य में शुरू होना चाहिए। परन्तु, इस आयत का अर्थ तनावपूर्ण नहीं है यदि कोई वाक्यांश स्वीकार करता है जैसा कि वह NASB में दिया गया है, जो कि सभा में व्यवस्थित रूप के बारे में चर्चा के अन्त के रूप में है।

टिप्पणीकारों का प्रयत्न अक्सर मौलिक स्वीकृति की समस्या को सुलझाने में रही है कि 11:5 में पौलुस स्त्री भविष्यद्वक्ताओं के प्रति स्वीकृति को दिखाते हैं और साथ-साथ 14:34, 35 में उसने सार्वजनिक सभा में स्त्रियों के चुप रहने की माँग की है। प्रेरित ने कहा कि, **स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें,** एक ऐसे संदर्भ में जहाँ "कलीसिया" सभा के साथ निकटता से जुड़ा हुआ होता था। उसने कहा कि उन्हें अपने आपको **अधीन रहने की आज्ञा** मिली थी। स्वयं को अधिक स्पष्ट करने के लिये, निम्नलिखित आयत में उसने आगे कहा, **क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।**

दो भागों 11:1-16 और 14:34, 35 बारीकी से अध्ययन करने से पता चलता है कि इनके बीच के तनाव को बढ़ाकर कहा गया है। 11वीं अध्याय में चर्चा में, सभा में या किसी भी समय - किसी भी बात के लिये स्त्रियों का पुरुषों के अधीन होने का प्रश्न - एक अधीनता में रहने का मुद्दा था। उस संदर्भ में सिर को ढँकने का प्रतीक स्वरूप पूरी रीति से महत्वपूर्ण था। वहाँ, उसी सामाजिक प्रवृत्तियों ने प्रेरितों को पुरुषों के लिये सिर को न ढँके जाने और स्त्रियों के लिये सिर को ढँके जाने की महत्वत्ता पर ज़ोर देने के लिये प्रेरित किया। इसके विपरीत, यह आराधना के लिये इकट्ठे हुए कलीसिया (14:34) के संदर्भ में था, जिसमें पौलुस ने कहा था कि स्त्रियों को "स्वयं को अधीन" में रखना था। आराधना के लिये इकट्ठा होना कलीसिया के लिये आकस्मिक था, यदि प्रासंगिक हो, 1 कुरिन्थियों 11 में सिर ढँकना; यह अध्याय 14 का विषय था। यदि

कलीसिया के सभा के दौरान सिर को ढँकना अधीन होना था, तो कोई यह अपेक्षा कर सकता है कि पौलुस को यहाँ पर चर्चा करनी चाहिए थी।

सिर होने के प्रश्न बारे में जो कुछ भी शामिल था और कलीसिया के सभाओं में स्त्रियों के लिये जो भी बातें निहित था, इसमें कलीसिया की सभा के पीछे पौलुस की सलाह उसकी चिन्ता के होने को प्रगट नहीं करता है। इसके बदले, उसकी मुख्य चिन्ता सिर ढँकने का संदेश देना था जब मसीही पुरुष और स्त्रियाँ सार्वजनिक रूप से एक दूसरे के साथ होते थे। प्रभु भोज (11:20) और अन्य भाषाओं के उपयोग के बारे में वाक्यांश ἐν ἐκκλησίᾳ (*एन एकलेसिआ,* "कलीसिया में"; 14:35; देखें 14:19, 28) दिया गया है केवल तब जब सभा में करना मुद्दा होता था। वाक्यांश पुरुषों या स्त्रियों के लिये सिर ढँकने के सम्बन्ध में नहीं बताता है।

14:34, 35 में सार्वजनिक आराधना में नेतृत्व के प्रश्नों को एक प्रेरिताई प्रतिक्रिया के लिये जाना जाता है। 14 अध्याय के दौरान, सभा में व्यवहार पौलुस के निर्देशों और चेतावनियों की पृष्ठभूमि थी। स्पष्ट है, उन्हें पता था कि कलीसिया में कुछ स्त्रियाँ "कलीसिया में" गड़बड़ कर रही थीं। इसलिये, उसने उन्हें चुप रहने का आज्ञा दी। उनके चुप रहने के द्वारा, वे अपने पतियों के नेतृत्व की स्वीकृति को ग्रहण करते थे। पौलुस ने कहा कि यही तरीका था जो आवश्यक है।

अपने तर्क के समर्थन में, प्रेरित ने व्यवस्था को वाक्यांश **जैसा व्यवस्था में लिखा भी है** के साथ अपील किया। यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि वास्तव में व्यवस्था की कौन सी बात पौलुस के मन में चल रहा था। शायद वह उत्पत्ति 3:16 के शब्दों के बारे में सोच रहा था, जहाँ उस स्त्री को कहा गया था, "... तेरे पति ... तुझ पर प्रभुता करेगा।" प्रेरित ने अपने अनुदेश के लिये कोई अपवाद नहीं दिया कि स्त्रियाँ सभा में "चुप रहें" (σιγάω, *सिगाओ),*[15] परन्तु सलाह को पूर्ण रूप से नहीं लिया जा सकता। उदाहरण के लिये, हो सकता है स्त्रियों ने सम्भवतः सभा में गाया हो। 14:34, 35 के मुद्दे, आराधना सभा में नेतृत्व में सार्वजनिक रूप से बोलने से प्रकट हुआ हो।

यूनानी जगत में, स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा बहुत ही कम शिक्षा मिलती थी। प्लुटार्क, पौलुस के एक समकालीन और डेल्फ़ी में एक याजक ने सलाह दी कि एक पत्नी को सार्वजनिक रूप से बात नहीं करनी चाहिए, परन्तु उसे "अपने पति से या अपने पति के द्वारा बात करनी चाहिए।" उन्होंने कहा, "और उसे परेशान नहीं होना चाहिए, एक बांसुरी बजानेवाले के समान, वह एक भाषा के माध्यम से अधिक प्रभावशाली ध्वनि निकालती है उसकी स्वयं की नहीं होती।"[16]

सामाजिक मानदण्डों को मनाया जाना था, परन्तु प्रेरित के शब्द रीति रिवाजों से ऊपर उठकर माँग करता है। वह यह कह रहा था कि कलीसिया के लिये सार्वभौमिक आदर्श स्त्रियों को पुरुषों के आराधना के नेतृत्व से स्थगित होना था जब कलीसिया इकट्ठी होती थी। धर्मवैज्ञानिक प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण हैं। यदि प्रेरिताई कलीसिया का अभ्यास आदर्श था, तो आधुनिक कलीसिया को इन

निर्देशों के अनुसार अपनी प्रथा को आदर्श बनाना चाहिए। यह कहना नहीं है कि कलीसियाओं की सभाओं में स्त्रियों को बिल्कुल चुप रहना चाहिए। उदाहरण के लिये, कोई भी पूर्ण रीति से चुप नहीं हो सकता, और गाते किसी साथी विश्वासी से नमस्कार करते। बल्कि, जब कलीसिया में नेतृत्व की बात आती है, तब स्त्रियों को पुरुषों को स्थगित करना चाहिए।[17]

14:34, 35 और 11:5 में पौलुस के अनुदेश के बीच चल रहे तनाव को एक या दो तरीकों से सुलझाया जा सकता है। सबसे पहले, पौलुस यह अनुमति दे सकता है कि जब स्त्रियों ने पवित्र आत्मा की प्रत्यक्ष आवेग के तहत भविष्यद्वाणी की थीं, तो जो माँग वे कहते हैं वह सामान्य नियमों पर स्त्रियों को "कलीसियाओं में चुप रहने" को प्राथमिकता देती है। दूसरा, स्त्रियों ने कलीसिया की सार्वजनिक सभा से अन्य परिवेश में भविष्यद्वाणी की होगी, सम्भवतः जब केवल अन्य स्त्रियाँ उपस्थित थी या जब मसीही अनौपचारिक समय में एक साथ होते थे। क्योंकि शिक्षा और सुधार, जहाँ तक हम जानते हैं, भविष्यद्वाणी में निहित थे (उदाहरण के लिये, 1 यूहन्ना 4:1 देखें), दूसरी व्याख्या को हल्के ढंग से खारिज नहीं किया जाना है। 1 कुरिन्थियों 11 में पौलुस की चिन्ताएँ पुरुषों और स्त्रियों के एक दूसरे के साथ संगति के व्यवहार के लिये लगता है, यह ज़रूरी नहीं कि जब वे एक साथ "कलीसिया में" इकट्ठे हों।

लिंगों के बीच समानता की माँगों की भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, कुछ लोगों को एक छोटे से पाठ की भिन्नता से बचने के लिये एक पलायन मिलता है। कुछ छोटे पुस्तकों और अनुवाद 14:40 के बाद 14:34, 35 आते हैं। उनमें से किसी में भी आयतों की कमी नहीं है, परन्तु यहाँ तक कि उनके गलत स्थान पर होने पर भी कुछ लोगों का तर्क है कि 14:34, 35 पौलुस के मूल पत्री का हिस्सा नहीं था; अर्थात् वे दावा करते हैं कि बाद में किसी लेखक द्वारा शब्दों को सम्मिलित किया गया था।[18] यह पता लगाना कठिन है कि कुछ पुस्तकों में आयतों की जगह क्यों बदल दी गई थी, परन्तु यदि किसी लेखक ने अकस्मात आयतों को छोड़ दिया हो और फिर अपनी गलती को स्वीकार किया हो, पूरे पृष्ठ को फिर से लिखने के बदले, उसने 14:40 के बाद उनकी प्रतियाँ तैयार की हो। नया नियम की सबसे पुरानी और सबसे सम्मानित प्रतियाँ 14:33 के बाद 14:34, 35 हैं। जो लोग पाठ से 14:34, 35 को छोड़ना चाहते हैं, वे व्यक्तिगत मुद्दा से उत्पन्न होने वाले पूर्वाग्रह से प्रेरित होते हैं।

पौलुस के निर्देशों के अनुसार, एक स्त्री अपने पति के लिये अपमानित होने के खतरे को टालते हुए जो भी प्रश्न उसके पास होते थे उन्हें गुप्त में उठाना था। प्रेरित ने स्त्रियों को निर्देश दिया कि वे आराधना, नैतिकता, या कलीसिया के स्वीकृति के बारे में **घर में अपने अपने पति से पूछें** (14:35)। यह सच है कि पौलुस की शिक्षा का एक हिस्सा यूनानी संस्कृति के लिये विशिष्ट था जिसे उसने सम्बोधित किया था। स्त्रियों को सार्वजनिक मंच में टिप्पणी करने या प्रश्न उठाने का औचित्य समय पर निर्भर करता है; परन्तु सांस्कृतिक मामलों को सम्बोधित करने के बाद, प्रेरित के कथन पर न करना कठिन है। जैसा कि वे घर में करते हैं,

पुरुषों की कलीसिया में नेतृत्व की ज़िम्मेदारियाँ हैं जो पुरुष होने के कारण उनके क्षेत्र में आती हैं (कुलुस्सियों 3:18, 19)। स्वयं को स्पष्ट करते हुए, पौलुस ने कहा, **क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।** प्रभु की कलीसिया के प्रत्येक सभा को परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहने के विचार के साथ यहाँ सम्बोधित किए गए मुद्दों पर काम करना चाहिए।

आधुनिक धार्मिक परिदृश्य में, एक प्रश्न अक्सर उठता है: "क्या होगा यदि किसी स्त्री का पति नहीं है?" प्रश्न कुरिन्थियों के विश्वासियों के लिये दबाव डालने जैसा नहीं होगा। पौलुस के लिये लगता है कि इसका लाभ उठाया जा सकता है कि एक सम्मानजनक स्त्री का विवाह होने पाए। एक विवाहित स्त्री सामान्य रूप से अपने पति के लिये धार्मिक निर्देशों का पालन करती है। मसीह के प्रति विश्वासयोग्य होने के लिये, एक पति को अपनी पत्नी को सिखाना और उसके प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। आधुनिक कलीसिया में, सामाजिक प्रवृत्त एक स्त्री को अधिक स्वतंत्रता की अनुमति है। उसे बाइबल की कक्षाओं में या अन्य अनौपचारिक परिवेश में प्रश्न उठाने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके अलावा, आज एक स्त्री सम्माननीय और अविवाहित हो सकती है। अविवाहित स्त्री पति के अलावा कोई भी जो उसे जानकारी दे या उसके प्रश्नों के उत्तर दे उनके पास जा सकती है। वह एक रिश्तेदार, एक प्राचीन या कलीसिया के किसी अन्य सम्मानित सदस्य को पूछने के लिये चुन सकती है।

आधिकारिक समर्थन के लिये नया नियम से अपील करने में सक्षम होने के बिना, पौलुस ने कलीसियाओं के बीच कुरिन्थ को सम्बोधित किया। कुछ स्तर पर, उसने कलीसियाओं के मानक प्रथाओं के लिये अपील की। 7:17 में, प्रेरित ने पतियों और पत्नियों के लिये अपने निर्देशों को लिखा, "और इसलिये मैं सभी कलीसियाओं को निर्देशित करता हूँ।" 11:16 में, जब विषय सिर ढँकने का था, तो उसने घोषणा की, "कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।" जब उसने भाइयों को अनुशासन के बारे में सलाह दी, "... तो उसने लिखा, जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है" (14:33)।

आयत 36. कुरिंथुस में पौलुस के विरोधियों के बारे में कुछ भी कहना कठिन है और हमें इनकी ताकत के बारे में भी अधिक ज्ञान नहीं है। यह स्पष्ट है कि प्रेरित अपने विरोधियों का सामना करने के लिए तैयार था। ये शब्द कि **क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला है?** 7:17, 11:16, या 14:33 से अधिक कठोर थे। फिर भी, एक सामूहिक भावना ने उन सबको प्रेरित किया था; अर्थात सभी कलीसियाओं का व्यवहार, कुरिंथुस की लिए कलीसिया के मार्गदर्शन का स्रोत बन गया था। कुरिंथुस की कलीसिया की सभा में अनुशासनहीनता या उपद्रवी व्यवहार, मसीह की कलीसिया, जहाँ भी एकत्रित होती थी, उनके लिए अपमान था। कुरिंथुस के मसीही लोगों को दूसरे कलीसिया की व्यवहार से सीखना चाहिए था। सुसमाचार उनसे नहीं निकला था। यदि इस नगर के मसीही लोग यह सोचते थे कि दूसरे नगर के मसीही लोग इनके व्यवहार का अनुकरण करें तो यह उनके अहंकार का चरम नमूना होगा। पौलुस ने उनको उनके सच्चाई

की ओर यह पूछकर फेरा कि **क्या केवल तुम ही तक [सुसमाचार] पहुँचा है?**

आराधकों के लिए सामान्य निर्देश (14:37-40)

[37]यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं। [38]परन्तु यदि कोई यह न माने, तो उसको भी न मानो। [39]अतः हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो; [40]पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।

आयत 37. पौलुस ने सच्चे **भविष्यवक्ता** या **आत्मिक** जन के चिह्न दिखाए हैं जो प्रेरित के शब्दों को परमेश्वर की आज्ञा के रूप में पहचानने की क्षमता रखते हैं। पौलुस ने समझा कि परमेश्वर उसके द्वारा कार्य कर रहा था। वह इस प्रकार आत्मा द्वारा प्रेरित था कि जो कुछ भी उसने लिखा वह कलीसिया के लिए **प्रभु की आज्ञा** थी। जे. ग्रेशम माखेन के अनुसार,

> अपने प्रेरिताई अधिकार के अंतर्गत, जिन बात को पौलुस ने कलीसिया को स्वयं लिखा, विस्तृत दृष्टिकोण के अंतर्गत वह प्रभु की आज्ञा ठहरी, जिसमें प्रभु का अधिकार पाया जाता था [14:37]।[19]

पौलुस ने संभवतः यह वक्तव्य इसलिए कहा होगा क्योंकि उसको लगा कि कुरिंथुस की कलीसिया में कोई उसके प्रेरिताई की अधिकार को चुनौती दे रहा था (देखें 2:13; 2 कुरिन्थियों 10:2)। व्यक्तिगत संघर्ष, कलीसिया का परमेश्वर को समर्पण के संघर्ष में बदल गया था।

आयत 38. जो सच्चाई पौलुस ने लिखा, उसको **मानने** से जिसने भी इनकार किया, या किसी विशेष विषय पर कलीसिया को निर्देश देने की उसके अधिकार को स्वीकार नहीं किया था, वे अज्ञानी ठहरे। पौलुस के आलोचक उघाड़े जाएंगे। संभवतः पौलुस स्वयं ऐसा करेगा या फिर कुरिंथुस के वास्तविक आत्मिक भाई लोग ऐसा करेंगे; हो सकता है कि पौलुस यह कह रहा हो कि प्रभु स्वयं उनको उघाड़ेगा। उसी समय, प्रेरित ने कहा, **उसको भी न माना जाए।** अर्थात, वह भी आत्मिक व्यक्ति या प्रेरित न माना जाए। इन शब्दों में उसका झुंझलाहट दिखाई देता है। जो लोग उसको आत्मा के द्वारा दिए गए निर्देशन का इनकार करते हैं उनके साथ वह वाद-विवाद नहीं करता रहेगा। किसी मोड़ पर वह अपने विरोधियों को छोड़कर उन्हें उनकी अज्ञानता पर ही छोड़ देगा। लेकिन इस समय वह आगे बढ़ जाता है।

आयत 39. कलीसिया की खातिर, इसकी उन्नति और बढ़ोतरी के लिए, भविष्यवाणी, अन्य भाषा में बोलने से अधिक महत्वपूर्ण वरदान था। यद्यपि प्रेरित ने अन्य भाषा में बोलने के लाभ का इनकार नहीं किया था। आत्मा ने जिसको जो भी वरदान दिया था, उसका प्रयोग करने के लिए किसी को भी

वंचित नहीं किया गया था। जब अनुशासित होकर अन्य भाषा में बातचीत करने का वरदान प्रयोग किया जाता है तो भविष्यवाणी के समान, इससे भी कलीसिया को लाभ पहुँचता है। पूरे अध्याय 14 में, पौलुस उनको संबोधित किया है, जिनकी आत्मिक वरदान उनको बोलने के लिए प्रेरित कर रहा था। चाहे वरदान अन्य भाषा में बोलने का हो या फिर भविष्यवाणी करने का, वक्ता इन वरदानों का प्रयोग करने के लिए विशिष्ट अवसर और परिस्थिति का चुनाव करता है (14:27-33)। जो अन्य भाषा में बोलते हैं, आत्मा उनको आश्चर्यजनक तरीके से ऐसे भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करता है; जो भविष्यवाणी करते हैं उन्हें आत्मा के अधिकार के अंतर्गत ही भविष्यवाणी करने के लिए संदेश मिलता है। जब इन वरदानों का अनुशासित वातावरण में प्रयोग किया जाता है तो ये वरदान मसीह की देह की उन्नति के लिए कार्य करते हैं। यदि इनका प्रयोग, अन्यथा दूसरे पर्यावरण में होता है तो इससे कलीसिया की सार्वजनिक छवि धूमिल हो जाएगी। अर्थात्, जो कलीसिया की प्रवृति समझना चाहते है उनके बीच भ्रम पैदा हो जाएगा।

आयत 40. पौलुस के शिक्षा में कलीसिया का विशेष दृष्टिकोण यह है कि **सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ**। पौलुस, मसीही लोगों की किसी हठीले, औपचारिक दिखने वाला कलीसिया की वकालत नहीं कर रहा था। वह यह कह रहा था कि कलीसिया को कुछ गिने चुने लोगों के दबाव में आकर पतित होने से बचाने के लिए उसे एक सीमा तक योजनाबद्ध और संरचनात्मक करने की आवश्यकता है। सभी मसीही लोगों को जो भी वरदान मिला है, वह उन्हें परमेश्वर की आराधना करने में प्रयोग करना चाहिए। वेन ए. मीक ने उचित ही कहा है, "आत्मिक वरदानों का मूल्य, समुदाय को दृढ़ करने और उसका 'निर्माण' करने पर आधारित है। 'निर्माण' का अर्थ तर्क के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।"[20]

अनुप्रयोग

मसीही लोगों की आराधना सभा

नये नियम के मसीही लोग एकत्रित होकर जो करते थे, इस विषय पर पहला 1 कुरिंथियों 14, अन्य अनुच्छेद से सबसे बढ़कर रोशनी डालता है। आज के मसीही लोग इस अनुच्छेद, "इसलिये हे भाइयो, क्या करना चाहिए जब तुम इकट्ठे होते हो ..." की चाह करते होंगे, जिसके पश्चात एक के बाद एक बातें अनुमोदन करने की सूची जारी की गई हो। उसके (परमेश्वर के) निजी कारणों से, परमेश्वर ने हमारे सम्मुख इस प्रकार आराधना की प्रक्रिया स्थापित नहीं की है। यहाँ कुछ बातें हैं जिसके बारे में हम कह सकते हैं। (1) नये नियम के समय, मसीही लोग, प्रेरितों के प्रकाशन के द्वारा प्रत्येक प्रभु के दिन एक दूसरे के साथ सभा में एकत्रित होते थे (देखें 1 कुरिंथियों 11:20; 16:2)। (2) सभा के दौरान मसीही लोग प्रभु भोज में भाग लेते थे (11:20, 23-26; देखें प्रेरित 20:7),

भजन गाते थे, प्रार्थना करते थे, और पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित जन के द्वारा सुसमाचार का संदेश सुनते थे (14:26)। इसके साथ ही, अपनी क्षमता के अनुसार वे दान दिया करते थे (16:2)।

आराधना पर टिप्पणियां

मसीही सभा वह द्वार है जिसे परमेश्वर ने खोला है ताकि हम उसके बुलाहट का उत्तर दें और हम अपने सृष्टिकर्ता को प्रत्युत्तर दें। हम जीवन और एक विशाल कायनात जिसमें हम रहते हैं, के द्वारा रहस्यमयी बना दिए गए हैं। अनुभव ने हमें सिखाया कि हम एक निरीह प्राणी हैं; कल अनिश्चित है। आराधना के द्वारा हम अपने सृष्टिकर्ता, अनादि परमेश्वर के साथ सहभागिता करते हैं। हम में से कोई भी देने, प्राप्त करने और बांटने के अनुपस्थिति में, यह नहीं जानता है कि हमें अपने परमेश्वर या अन्य लोगों के साथ संबंध कैसे स्थापित करना है। जिन लोगों से हम प्रेम करते हैं हम उनको देते हैं। हम उनके साथ अपने शब्द, अपनी उपस्थिति, अपना समय, और जो भी भौतिक वस्तु हमारे पास है, बांटते हैं। संबंध, अंतः क्रिया की मांग है। परमेश्वर इससे अछूता नहीं है। आराधना एक ऐसा माध्यम है जिसे परमेश्वर ने अभिषिक्त किया है ताकि हम इसके द्वारा उससे वार्ता कर सकें।

लोग जो अन्य बातें करते हैं उसके समान, आराधना भी पाप से प्रभावित हो गया है। कोई भी पापरहित आत्मा से संपन्न नहीं है जो उसे सहज बोध से परमेश्वर की भक्ति और आराधना करने की अनुमति देता हो। परमेश्वर की आराधना करने के लिए विश्वासियों को उसकी सुनने की आवश्यकता है और इसके लिए जैसे वह दिशा निर्देशित करता है, वैसे ही आराधना करने की आवश्यकता है। यह संभव है कि हम आराधना को स्व महिमा मण्डन में बदल सकते हैं। यदि हमें अपनी आराधना को परमेश्वर को भेंट के रूप में चढ़ाना है, तो हमें उसकी सुनना है कि वह हमसे क्या चाहता है।

अपनी अनुग्रह के द्वारा, वह हमारी शक्तिहीन स्तुति भी स्वीकार करता है। जब हम परमेश्वर की महिमा करते हैं तो वह हमारी आराधना की भेंट का स्वागत करता है। बहुत से लोग प्रयास नहीं करते; और लगता है कि बहुत से लोगों को उसकी परवाह नहीं है। मसीही होने के नाते जब हम आराधना में सर्वोत्तम भेंट चढ़ाते हैं, तो इसका अच्छा परिणाम होता है। परमेश्वर हमारी आराधना को चमकाता है। उसका आत्मा हमारे अंदर कार्य करता है और हमें प्रार्थना और उसका आदर करना सिखाता है। एलेक्जेंडर ग्राहम बेल तब दूरभाष का अन्वेषण करने का प्रयास नहीं कर रहा था जब उसे पता चला कि इस प्रकार का संवाद भी संभव है। उनकी पत्नी लगभग बहरी हो चुकी थी, और तब वह आवाज़ को किसी प्रतीकात्मक रूप में बदलने का प्रयास कर रहा था कि वह उसका अनुवाद कर सके। अन्वेषक ने अकस्मात ही जाना कि आवाज़ तार के माध्यम से दूसरे छोर पर भेजा जा सकता है। बेल, दूरभाष बनाने का प्रयास नहीं कर रहा था बल्कि वह तो *कुछ ऐसा* कर रहा था जिससे दूरभाष की खोज हुई।

जब हम कुछ करते हैं, जब हम परमेश्वर की सुनते हैं और उसकी आराधना करने का प्रयास करते हैं तो परमेश्वर की दया से हमारे प्रयास से अच्छी बातें निकलकर आती हैं। हमारे सभी पापों और कमियों के बावजूद, जब हम आराधना करते हैं तो परमेश्वर प्रसन्न होता है।

अन्य-अन्य भाषा में बोलना - तब और अब

पौलुस का अन्य भाषा के विषय पर चर्चा पर आधारित निम्न अवलोकन प्रस्तुत किया गया है।

पौलुस के सभी पत्रियों में, 1 कुरिंथियों को छोड़कर, अन्य भाषा को आश्चर्यकर्म की श्रेणी में नहीं रखा गया है। इसका यह अर्थ हुआ कि अन्य भाषा में बोलना सामान्य अभ्यास नहीं था। जहाँ तक हमें मालूम है, अन्यत्र इसमें किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं पाया जाता है।

यदि कोई यह अनुमान लगाए कि पवित्रशास्त्र का कुछ अनुच्छेद दूसरे अनुच्छेदों को समझने में सहायता करता है तो 1 कुरिंथियों 14 की घटना को, प्रेरित 2 अध्याय की घटना के संदर्भ में पाठकों को समझने में सहायता करेगा। प्रेरित 2 में अन्य भाषा अलग-अलग भाषाएं है।

उन्मादपूर्ण बोली, जैसे कि आजकल कुछ लोग समझते हैं, अन्य भाषा में बोलने की घटना है जिसका प्रमाणित सत्यापन नहीं है।

ग्लोसालालिया के संदर्भ में, समाजशास्त्री मीक्स के अनुसार,

> ग्लोसालालिया एक सीखा हुआ योग्यता है, जबकि इसका क्रियाविधि अचैतन्य है। जिस अवसर पर यह प्रकट होता है वह किसी समूह की अपेक्षा पर निर्भर है जो धार्मिक प्रक्रिया के कारण अलग-अलग भागों में प्रकट होता है।[21]

जिन्होंने अन्य भाषा में बोलने का आधुनिक धार्मिक घटना के रूप में अध्ययन किया है उनका मत है कि यह एक सार्वजनिक प्रक्रिया है, जिसकी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जड़ें हैं और इसमें आध्यात्मिक अभिव्यक्ति जैसे कोई बात नहीं है।

पौलुस का पुराने नियम के प्रति निवेदन (14:21)

आधुनिक पाठक, जब पौलुस के 1 कुरिंथियों 14:21 की "अन्य भाषा" का संदर्भ, यशायाह 28:11, 12, के संदर्भ में परीक्षण करते हैं तो उन्हें अटपटा सा लगेगा। यशायाह का अपने समकालीन लोगों को "एक विदेशी भाषा" के बारे में संदेश का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर इस्राएलियों से विदेशी लोगों से बातचीत करेगा। इसका कुरिंथुस की कलीसिया में किसी व्यक्ति विशेष का आत्मा के वरदान के द्वारा अन्य भाषा में बोलने से कोई संबंध नहीं है। यदि यशायाह का अनुच्छेद नए नियम की भविष्यवाणी के बारे में नहीं है तो पौलुस का इसको यहाँ उल्लेख करने का उद्देश्य क्या है?

मसीही लोगों को यह जानना चाहिए कि पुराने नियम का नये नियम में

प्रत्येक उद्धरण मसीह के जीवन या कलीसिया का जिसे उसने स्थापित किया है, की किसी घटना का भविष्यवाणी नहीं है। (1) कभी-कभी नये नियम के लेखकों ने पुराने नियम का उद्धरण अपने नैतिक मूल्यों का समर्थन करने के लिए प्रयोग किया है। जब पौलुस ने लिखा, "क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है" (रोमियों 13:8), और उसके पश्चात उसने कुछ दस आज्ञाओं का वर्णन किया है, प्रेरित यहाँ यह नहीं कह रहा है कि ये वचन यीशु या उसके लोगों के लिए है। बल्कि, प्रेरित पुराने और नये नियम के बीच निरंतरता दिखाने का प्रयास कर रहा है। वह दृढ़तापूर्वक यह कहना चाह रहा था कि मसीह का संदेश उसी प्रकार का नैतिक जीवन जीने की मांग करता है जिस प्रकार पुराने नियम में मांग की गई थी।

(2) कभी-कभी इस्राएल के इतिहास में किसी ऐसी घटना का वर्णन पाया जाता है जो कि नए नियम में वर्णित घटना के समान था। मत्ती ने होशे 11:1 का उद्धरण, "मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया" (मत्ती 2:15) दिया, इस्राएल के लोग, जो आत्मिक रूप से परमेश्वर के संतान हैं, जब मिस्र से निकलकर आए थे और जब यूसुफ़ ने यीशु को मिस्र से कनान में रहने के लिए निकाल लाया था, के बीच समानता दर्शाने के लिए लेखक ने इस उद्धरण का प्रयोग किया था। ये दोनों घटनाएं कुछ सीमा तक अनुरूप हैं, परंतु मत्ती को वर्तमान व्याख्याकर्ता के मानक के आधार पर होशे का उद्धरण लेकर पुराने नियम की व्याख्या करने के लिए उचित ठहराने की आवश्यकता नहीं है।

बाइबल और बाइबल के बाहर उनके मूल संदर्भ से वचनों को लेकर नई परिस्थिति में प्रयोग करना एक सामान्य अभ्यास है। उदाहरण सहायक सिद्ध हो सकता है।[22] संसार की सबसे प्रसिद्ध भवनों में से लंदन की एक भवन सेंट पॉल्स केथेड्राल है। अन्य वस्तुओं के साथ केथेड्राल के तहखाने में इस भवन के वास्तुकार सर ख्रिस्टोफर रेन गड़ा हुआ है (1632-1723)। उनकी कब्र की पहचान एक लातिनी भाषा में लिखी एक पटिया से की जा सकती है जिसे उनके पुत्र ने लिखा है। इसका इस प्रकार अनुवाद किया गया है, "यदि आप स्मारक ढूँढ रहे हैं तो अपने चारों ओर देखिए।" जब कोई अपनी आँखें पटिया से उठाकर ऊपर की ओर देखता है तो उसको केथेड्राल की शिखर और उत्कर्ष दिखाई देता है; इतने महान वास्तुकार के लिए किसी सुयोग्य मूर्ति का निर्माण नहीं किया जा सकता था।

वर्तमान काल के किसी भी व्यक्ति के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। माना एक वृद्ध मसीही व्यक्ति के विश्वासयोग्य पत्नी का देहांत हो जाता है। शोक सभा में, संभवतः वह उन लोगों को देखता है जिनकी उसने उनके कठिन घड़ी में परामर्श की हो, दरिद्र बच्चे जिनको उसने भोजन कराया हो, और उन महिलाओं को जिनको उसने बपतिस्मा लेने के लिए उत्साहित किया हो। इन लोगों को, जिनकी जीवन को उसकी पत्नी ने आशीषित किया हो, को देखकर वह कहेगा, "यदि तुम स्मारक देख रहे हो तो अपने चारों ओर देखो।" रेन के समाधिलेख का उल्लेख कर, पति यह दावा नहीं करेगा कि ये शब्द उनके पत्नी के बारे में लिखा गया है; लेकिन वे फिर भी उपयुक्त हैं, क्योंकि महिला का स्मारक

जीवित आत्माओं के साथ उकेरा जाएगा। नये नियम के लेखकों ने पुराने नियम को इसी संदर्भ में लिया, और इसी तरह पौलुस ने यशायाह 28:11, 12 को 1 कुरिंथियों 14:21 में उदधृत किया है।

समाप्ति नोट्स

[1]आई. हॉवर्ड मार्शल, *न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी: मेनी विटनेसेस, वन गोस्पेल* (डाउनर्स ग्रोव, इल: इंटरवेर्सिटी प्रेस, 2004), 253. [2]KJV ने भाषाओं के लिये "अज्ञात" शब्द का प्रयोग करते हुए अनुवाद की समस्या के लिये योगदान दिया है। यूनानी में केवल γλῶσσαι (*ग्लोस्साई*, "भाषाओं") है। [3]कुर्नेलियुस और उसका घराना (प्रेरितों के काम 10:46) और इफिसुस के बारह पुरुषों (प्रेरितों के काम 19:6) ने भी भिन्न भिन्न भाषाओं में बोला, परन्तु परिघटना का वर्णन किसी अन्य मामले में नहीं किया गया है। [4]जिमी जिविडेन, *ग्लोस्सोलालिया: फ्रॉम गॉड ऑर मैन?* (फोर्ट वर्थ, टेक्स.: स्टार बाइबल पब्लिकेशन्स, 1971), 37-38. [5]विलियम जे. समरीन, *टंग्स ऑफ़ मेन एण्ड एन्जेल्स: द रिलिजिअस लॉन्गवेज ऑफ़ पेन्टेकोस्तालिज्म* (न्यू योर्क: मैकमिलन कम्प., 1972), 128. [6]डेविड ई. गारलैंड, *1 कोरिन्थियन्स,* बेकर एक्सेजेटिकल कमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन.: बेकर एकेडमिक, 2003), 641. [7]NASB 14:19, 28 में एक लेख "कलीसिया में" के साथ वाक्यांश का अनुवाद करके, परन्तु 14:35 में लेख बिना भ्रम को उत्पन्न करता है, सभी मामलों में, 11:18 सहित, इसका अर्थ "सभा में" है। [8]एवरेट फर्ग्यूसन, "'व्हेन यू कम टूगेदर': *एपी टू ऑटो* इन अर्ली क्रिस्चियन लिटरेचर," *रेस्टोरेशन क्वाटर्ली* 16, न. 3/4 (1973): 202-8. [9]गॉर्डन डी. फी, *द फर्स्ट एपिसल टू द कोरिन्थियन्स,* द न्यू इन्टरनेशनल कमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम. बी. एर्डमन्स पब्लिशिंग कं., 1987), 571. [10]देखें 14:3, 4 (दो बार) 5, 12, 17, 26.

[11]बेन विदरिंगटन तृतीय, *कनफ्लिक्ट एण्ड कम्युनिटी इन कोरिन्थ: अ सोसिओ-रिटोरिकल कमेन्टरी ऑन 1 एण्ड 2 कोरिन्थियन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. एर्डमन्स पब्लिशिंग कं., 1995), 285. [12]गारलैंड, 658. [13]वाल्टर बाउएर, *अ ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिस्चियन लिटरेचर,* 3र्ड एड., रेव्ह. एण्ड एड. फ्रेडरिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 244. [14]लियोन मॉरिस, *द फर्स्ट एपिसल ऑफ़ पौल टू द कोरिन्थियन्स,* एड., टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कमेन्टरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. एर्डमन्स पब्लिशिंग कं., 1985), 199-200. [15]क्रिया के इसी रूप का प्रयोग 14:28, 30 में भी किया गया है, जहाँ पर इसका प्रभाव गलती योग्य नहीं है। [16]प्लूटार्क "एडवाइस टू ब्राइड एण्ड ग्रूम" *मोरालिया* 2.32 [142]. [17]जेम्स ग्रीनबरी ने गंभीर रूप से इस विचार की जाँच की कि "पौलुस केवल भविष्यद्वक्ताओं के मौखिक रूप में सिखाने में स्त्रियों की भागीदारी से ही मना कर रहा है" और स्वयं भविष्यद्वाणी करने से नहीं (जेम्स ग्रीनबरी, "1 कोरिन्थियन्स 14:34-35: इवाल्युशन ऑफ़ प्रोफेसी रिविसीटेड," *जर्नल ऑफ़ इवेन्जीलिकल थियोलॉजिकल सोसायटी* [दिसेम्बर 2008]: 721-31.) अन्त में, उन्होंने दृष्टिकोण को रद्द कर दिया। [18]यह टिप्पणीकारों द्वारा प्रस्तुत समाधान है, जैसे कि फी ने बताया 699-701. [19]जे. ग्रेशम माखेन, *दी ओरीजिन आफ पॉल्स रिलीजन* (ग्रैंड रैपिड्स मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1947), 147. [20]वेन ए. मीक, *द फर्स्ट अर्बन क्रिश्चयनः द सोशल वर्ल्ड आफ अपोस्टल पॉल,* 2 द्वितीय संस्करण (न्यू हावेनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003), 123.

[21]पूर्वोक्त., 120. [22]निम्न लिखित वक्तव्य डूवान वार्डेन, "कनविंसिंग एवीडेंस," *गॉस्पल एडवोकेट* 141 (अक्तूबर 1999): 14 से उल्लेखित है।